मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख ● पूर्ण अंक २०३ ● जून -२०२४
Volume no. 18, Issue No. 203 June 2024

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१
Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad- 380001

भुज मंदिर के २०१ वे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते और सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

भुज प्रसादी मंदिर के १४ वे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजीकी आरती उतारते और सभा में आशीर्वाद देते
प.पू. आचार्य महाराजश्री साथ में भुज मंदिर के पू. महंत स्वामी तथा पार्षद जादवजी भगत ।

डलास (अमेरिका) मंदिर में सभा में दर्शन देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

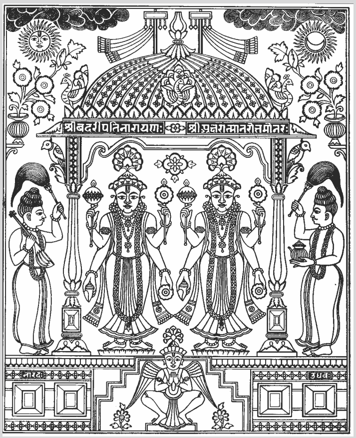

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : magazine@swaminarayan.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १७ ● अंक : २०३ ● जून-२०२४

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०४

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०५

०३. मंगलाचरण प्रात: स्मरण ०६

०४. श्रीहरि के ७ वे और ८ वे वंशज के मुख से अमृत वचन ०८

०५. रे श्याम ! आप ही सच्चे धन १३

०६. प्याज – लहसुन क्यो नही ? १४

०७. नाम – धर्मादा १९

०८. अपने हरिंमदिर तथा प्रसादी के स्थान (सादरा-वासणादेश) २१

०९. भक्ति सुधा २४

१०. सत्संग समाचार २६

श्री स्वामिनारायण

अस्मदीयम्

भक्ति ! हम भक्ति करते है। किसकी भक्ति करते है ? इस पर अधिक विचार करना है।

महाराज भगवद् भक्ति से विमुख, राक्षसी वृत्ति वालो का त्याग करना कहते है। भगवद् भक्ति के रस का अनुभव करने के लिये देवता भी मनुष्य जन्म की ईच्छा रखते है।

मनुष्य के पास सभी सद्‌गुण हो, यदि भक्ति नही है, तो घी तथा जीरा से तथा मिरचा युक्त सब्जी में यदि नमक नही रहे तो ऐसी ही बात है।

ब्रह्मा इत्यादि को भी काल से डर लगता है। अखंड सुख नही है। अनंत अखंड सुख तो भगवान के दास बनकर भक्ति के बल से मिलता है। महाराज कहते है कि ''भक्ति रहित शुष्क तप केवल शरीर के क्लेश समान ही है।''

लेकिन भक्ति महात्म्य ज्ञान के साथ करना है। भगवान को यथार्त रुप में जानना महात्म्य है। हमें एक अवसर की बात याद आ रही है।

रास्ते में जाते समय हमने २०० की नोट गिरी हुई देखे। भगत को बोले इस लिये उन्होने नोट को हाथ में ले लिया नोट नई थी। देखने में मूल रुप में लगती थी। लेकिन यह खराब नोट थी। ध्यान पूर्वक अवलोकन करने पर ज्ञात हुआ कि यह नकली नोट है।

छोटा बच्चा सच्ची नोट को भी फाड देता है।उसे नोट की महिमा का ज्ञान नही होता है। नोट भले ही पुरानी हो, गल तथा मुड गई हो लेकिन सच्ची नोट तो सच्ची ही रहेगी। नई नोट नकली सुंदर हो तो भी उसकी भक्ति नही करते है। कभी-कभी नकली नोट को सत्य समझ कर भक्ति करने लगते है। कितनी सुंदर सब समान है। ऐसा नहीं होना चाहिए।

लेकिन सच्ची नोट को पहचानकर उसका महात्मय समझना है। सच्ची नोट की भक्ति करते है। प्रेम करे। सुरक्षित रखे। नकली नोट कितनी भी सुंदर हो उसकी भक्ति नही करना चाहिए। महाराजने स्वयं नरनारायणदेव की पधरामणी किये है। इसमें मैं अखंड प्रत्यक्ष हूँ। ऐसा बचन दिये है। इसका महात्मय समझकर उनकी भक्ति महात्म्य के साथ करना है।

जयश्री स्वामिनारायण।

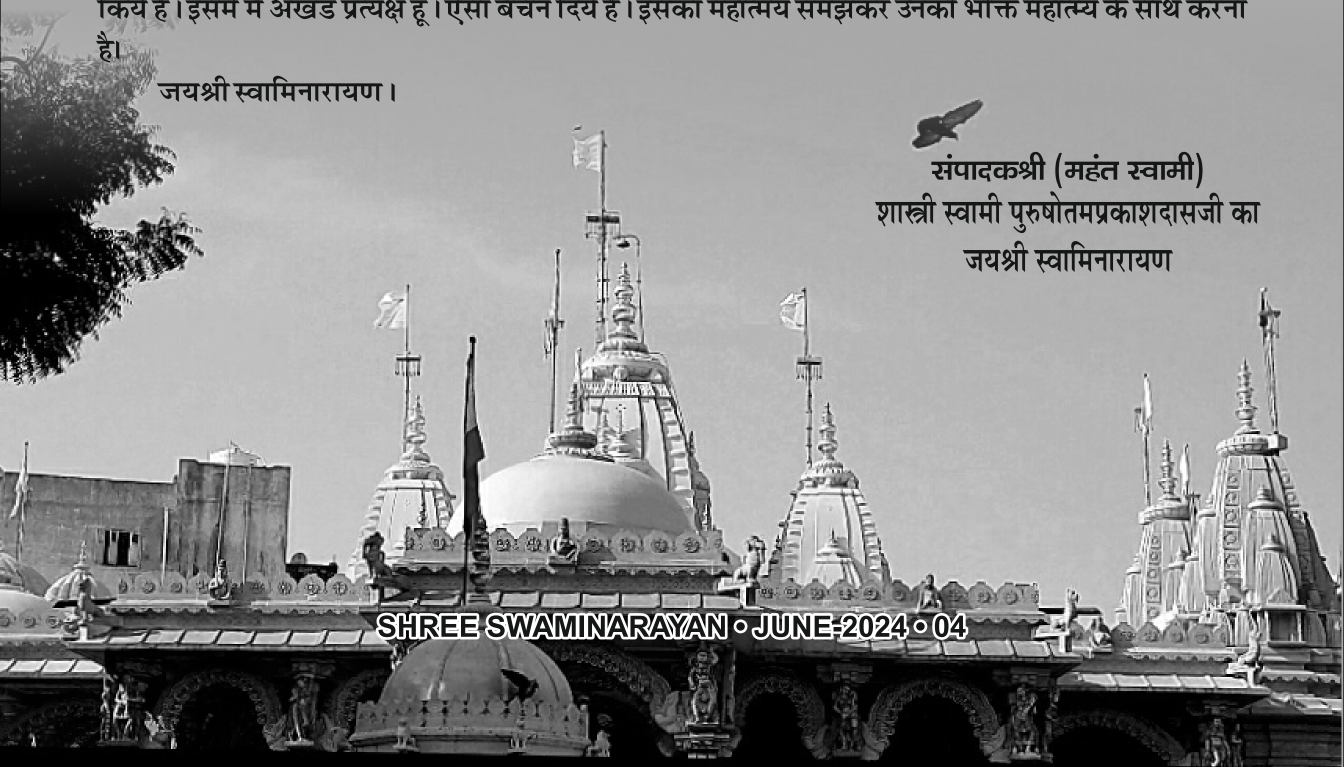

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा (मई-२०२४)

१-२ श्री स्वामिनारायण मंदिर सुखपर (रोहा) शताब्दी पाटोत्सव के अवसर और आमारा (कच्छ) में पधारना ।
४ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर एकादशी के दर्शन हेतु पधारना ।
९ श्री स्वामिनारायण मंदिर गोधरा (कच्छ) पाटोत्सव पर पधारना ।
१० श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा पाटोत्सव पर पधारना ।
११-१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) पाटोत्सव पर पधारना ।
१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा पाटोत्सव पर पधारना ।
१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर चिखलोड १७५ मां पाटोत्सव पर पधारना ।
१९-२० श्री स्वामिनारायण मंदिर मोरबी (दरबारगढ) के १५० वें पाटोत्सव महोत्सव के अवसर पर पधारना ।
नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर वांकानेर मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना ।
२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के पूनम सत्संग सभा में पधारना ।
२४ नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर भोजेला (वसईटींबा) (जी. दाहोद) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना ।
२५ श्री स्वामिनारायण मंदिर पेथापुर के २० वीं पाटोत्सव के अवसर पर पधारना ।
२५ श्री स्वामिनारायण मंदिर सरढव पुनः मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना ।
२७ श्री स्वामिनारायण प्रसादी मंदिर भुज पाटोत्सव पर पधारना ।
२८ श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका पाटोत्सव पर पधारना ।
२८ श्री स्वामिनारायण मंदिर घमीज रजत जयंती पाटोत्सव के अवसर पर पधारना ।
२९ से अमेरिका के धर्मप्रवास हेतु पधारमणी

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (मई-२०२४)

१ श्री स्वामिनारायण मंदिर गामडी १९५ वे पाटोत्सव पर पधारना ।
५ श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी के ५ वें पाटोत्सव पर पधारना ।
७ कल्याणपुष्टि मार्गी हवेली की ५४७ वी उत्सव के अवसर पर पधारना वस्त्रापुर ।
१० श्री स्वामिनारायण मंदिर न्यु राणीप पर पधारना ।
१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा खीचडी उत्सव पर पधारना ।
१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल के १९ वें पाटोत्सव पर पधारना ।
१९ श्री स्वामिनारायण मंदिर मोरबी (दरबारगढ) के १५० वें पाटोत्सव पर पधारना ।
२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में पूनम की सत्संग सभामें पधारना ।
२४ श्री स्वामिनारायण मंदिर पेथापुर के २० वें पाटोत्सव पर पधारना ।
२५ से अमेरिके धर्मप्रवास हेतु पधारना ।

॥ मंगलाचरण प्रातःस्मरण ॥

– शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी (अमदावाद)

प्रातः स्मरामि भवभीतिमहार्तिशान्त्यै
नारायणं गरुडवाहनमब्जनाभम् ।
ग्राहाभिभूतवरवारणमुक्तिहेतुं
चक्रायुधं तरुणवारिजपत्रनेत्रम् ॥१॥
प्रातर्नमामि मनसा वचसा च मूर्ध्ना
पादारविन्दयुगलं परमस्य पुंसः ।
नारायणस्य नरकार्णवतारकस्य
पारायणप्रवरविप्रपरायणस्य ॥२॥
प्रातर्भजामि भजतामभयंकरं तं
प्राक्सर्वजन्मकृतपाप भयापहत्यै ।
यो ग्राहवक्रपतितांध्रिगजेन्द्र
धोरशोकप्रणशनकरो धृतशंचक्रः ॥३॥
श्लोकत्रयमिदं पुण्यं प्रातः प्रातः पठेनरः ।
लोकत्रयपतिस्तस्मै दद्यादात्मपदं हरिः ॥४॥
प्रातः स्मरामि हरिकृष्णमुखारविन्दं बिम्बाधरं
स्मितसुधाहृतविश्वतापम् ।
कारुण्यपूर्णनयनं शुभनासिकाढ्यंपुण्ड्राढ्य-
भालमवतम्सलसत्कोपोलम् ॥५॥
प्रातः श्रये वृषजनेर्भुजदण्डयुग्मं
संसारसिन्धुपतिताश्रयणीयमेकम् ।
आजानुलम्बितवराभयदं मनोज्ञं संस्थापकं
स्वसुतयोश्च निजाकृतीनाम् ॥६॥
प्रातर्नमामि हरिकृष्णपादार्विन्दे
तीर्थीकृतावनितले हृदयावधार्ये ।
वज्राकुंशध्वजयवाम्बरगोष्पदोध्वरेखांकिते
नखविधुक्षत हृद्गातान्धे ॥७॥
प्रातः शिखान्तहरिकृष्णातनुं घनाभां
ध्यायामि सज्जनसभान्तरराजमानाम् ।
सप्रान्तशेखरः शिपटमादधानां
श्रीवत्सकौस्तुभसिताम्बर भूषणाढ्यम् ॥८॥

प्रातः जागते ही जो जीवात्मा भगवान का स्मरण करता है । उसका पूरा दिन आनंदमय व्यतीत होता है । भगवान की कृपा द्रष्टि होने पर जीव का आन्तयन्तिक कल्याण होता है । इसी कारण से ऋषिमुनि और पुराण कहे है कि प्रातः काल ब्रह्ममुहूर्त में भगवान के मूर्ति का स्मरण अवश्य करना चाहिए । उस परमात्मा के स्वरुप को किस प्रकार स्मरण करना चाहिए । वह भी पुराणो में भगवान वेद व्यासजी निश्चित करके बताये है कि इन तीन श्लोको का पठन करना चाहिए । इसी श्लोक का नित्य पाठ करने के लिये आदेश भगवान श्री स्वामिनारायणने भी सत्संगिजीवन धर्मशास्त्र में अपने आश्रितो को बताये है । तीनो श्लोक, का प्रतिदिन पाठ करने के लिये कहे है । इन तीनो श्लोक का भावार्थ होगा । उसे समझने का प्रयास करे ।

प्रातः काल में स्मरण करता हूँ । हमारे आराध्यदेव परमब्रह्म परमात्मा भगवान श्रीहरिकृष्ण नाम धारण किये भगवान श्री स्वामिनारायण दिव्य और सुंदर मुखवाले के समान सुंदर है । जिसके मुख के दो ओष्ठपके लाल गिलोडा कमल के समान है । जब अमृत समान हास्य करते है तो सम्पूर्ण विश्व के जीवो के तीनो प्रकार के कष्ट दैविक, दैविक और भौतिक कष्ट समाप्त हो जाता है । संसार में डूबे हुए दुखी प्राणियो को देखते है । उस समय उनकी आंख करुणा से भर जाती है । उनके मुख मंडल पर नाक तिल के पुण्य के रंग समान शोभा देती है । अपने तेजस्वी कपोल में विशाल माथे पर उर्ध्वपुंड्र तिलक अति शोभा बढाते है । (१)

संसार के जीव मात्र को प्रातः काल आश्रय करने योग्य हरिप्रसाद विप्र धर्मदेव के घर प्रगट हुए । भगवान

श्री स्वामिनारायणने अपने अपर स्वरुप धर्मवंशी आचार्यश्री के लम्बे भुज दंड आश्रित जीवो को वरदान देने जन्म मृत्यु अभय वरदान देने में तत्पर है। उनके मन की यही अभिलाषा भी है । संसार सागर में स्थित तथा कष्ट भोगते जीव का एक मात्र आशय देकर उसका कल्याण हो । भगवान के चरणो तक भेजना । इससे आत्यन्तिक मोक्षरुप महाफल मिलता है।(२)

प्रातः काल में उठकर सभी धार्मकि वृत्ति वालो मनुष्य जिसके दोनो चरणो में वज्र, अंकुश, ध्वज, जव, अम्बर, आकाश, दोवरद, गाय के चरण उर्ध्वरेखा आदि दिव्य शून्य चिन्ह हो और जिसके चरण में अँगूठे के नाखून में जीव के हृदय मे से अज्ञान रुपी अंधकार को दूर करने वाला प्रतीक हो । जो परमब्रह्म परमात्मतत्व के सूचक हो । उसमें सामुद्रिक शास्त्र में बताये गये लक्षण होने के बाद भी जो संसार के जीवो के हित के लिये महाभिनिष्क्रमण करके भयानक वनो में अनेक तीर्थो में विचरण करके जिज्ञासु मुमुक्षु की अपने स्वरुप का ज्ञान कराते है । वे अपने हृदय में धारण करके ऐसा तो भगवान श्रीहरिकृष्ण का श्री स्वामिनारायण के चरणारविंद है।(३)

प्रातः काल में जिसके हदयार्विद में श्रीवत्सल का चिन्ह धारण कर रखे है। और कौस्तुभमणि से युक्त सुदंर स्वर्ण हार पहने है। और सदैव सफेद बर्फ के समान स्वस्छ वस्त्र धारण किये है। उसके उपर सुगंधित रंग-बिरंगे पुष्पो का आभूषण धारण किये है। सिर पर सुंदर साँफा बाँधे है। साधु वेषधारी परम हँस है । उनकी सभा सिंहासन पर है । ऐसे भगवान हरिकृष्ण श्री स्वामिनारायण श्याम सुंदर मेघवर्ण जैसे रंग वाले दिव्य मानव शरीर का हृदय मे सतत ध्यान – चिन्तन करता हूँ।(४)

हे परमात्मा भगवान श्रीहरि दिव्य गरुणजी के वाहन वाले और जिसके नाभी कलम से जगत पिता ब्रह्माजी प्रगट हुए है। ऐसे महाभयानक मगरमच्छ के मुख में से गजराज को अपने हाथ में चक्र सुदर्शन धारण करके मुक्ति दिवालने वाले तथा शरण में आये जीवो के उपर ताजा सूर्य कि किरणे स्पर्श होने से कलम के खिलने से जो दृश्य बनता है । ऐसे कमलवत नेत्रो से करुणायुक्त भाव से भवसागर पार करा देते है । संसार के भायनक दुखो की शांति के लिये मैं प्रातः काल में शरण करता हूँ। (५)

वेदो और सद्रशास्त्रो का परिशीलन करने वाले स्वाध्याय पठन-फाठन और अनुसरण करने वाले विप्रो के आश्रय स्थल जीवो को महाभयानक नरक के दुखो-कष्टो से छुडाने वाले और संसार सागर से पार कराने वाले परमात्मा भगवान श्री स्वामिनारायण के चरणो को मैं प्रातः मन, कर्म वचन से उनके चरणो में सिर झूका कर बंदन करता हूँ।(६)

जिस परमात्मा गंधमादन पर्वत के उपर महा भयानक मगरमच्छ के विशाल मुख से गजराज को अपने हाथ में धारण चक्र सुदर्शन से रक्षा किये। अपने भक्तो को अभय प्रदान करने वाले ऐसे प्रभु की मै मेरे जन्म जन्मान्तर के संचित प्रारब्ध क्रियामण कर्मो से पाप से मुक्त होने के लिये प्रातः काल सहारा लेकर भजन करता हूँ ।(७)

इन तीनो श्लोको का जो भी भगवान का भक्त प्रतिदिनप्रातः पाठ करता है । उसके उपर त्रिलोक पति भगवान श्रीहरि उसे अपने दिव्य अक्षरधाम में पद देते है। उन श्लोको का भी व्यासजी पुराणो में और शतान्द मुनि सत्संगिजीवनमें नोट लिखे है।

भगवान श्री स्वामिनारायण ने प्रातः काल में जो पुराण प्रसिद्ध तीन श्लोको का पाठ करने की आज्ञा किये है । उसी प्रकार अपने सम्प्रदाय में अपने आराध्य देव भगवान श्री स्वामिनारायण के प्रति अटूट निष्ठा वाले भक्तो के लिये नंद परमहंसो ने भगवान श्री स्वामिनारायण ऐसे भाव वाले श्लोक को प्रतिदिन स्मरण करने के लिये रचना किये है। अच्छे भाव श्रद्धा से व्यक्त शब्दो का अर्थ समझे ।(८)

श्रीहरि के ७ वे और ८ वे वंशज के मुख से अमृत वचन

- संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

जेतलपुर मंदिर के १९८ वे पाटोत्सव के अवसर पर प.पू. महाराजश्री ता. ०२-०४-२०२४ : बलदेवदादा के चरणो में और सानिध् यमें बैठकर हम सभी भगवान के चरणो में भजन कर रहे है । यह बडीवात है । आज आनंद की बात है कि इतने हरिभक्त एकत्र हुए है और अवसर ऐसा मिला है । क्योकि हम लोग कही न कही श्वास लेने के लिये Breathing Space खोजते रहते है । पोल से बारर निकलकर Farm House (खेत वाली जगह में रहने वाली जगह) है । उसी प्रकार भगवान को भी Breathing Space तथा खुलापन चाहिए । बलदेव दादा के सामने अच्छा कार्य हुआ है । देव सरोवर का कार्य भी अपने सरंपचश्री अधिकारी और सरकारश्रीने जो मदद दी है । इस कारण से अच्छा हुआ है । यह धार्मिक स्थल ऐतिहासिक स्थल भी है । अपना सम्प्रदाय कोई दंतकथा पर आधारित नही है । इतिहास के साथ जुडा है । यह परम्परा और सिद्धान्त जितना सुरक्षित रहेगा । वह काम का होगा । मुझे गर्व है कि अहमदाबाद नरनारायणदेव देश क्षेत्र का विकास-विस्तार सिद्धान्त एवम् परम्परा को सुरक्षित रखकर कर रहा है । यह बडी बात है । आज यह शब्द है लेकिन १०-१२ या २५ पीढी के बाद इसकी महिमा की सूचना प्राप्त होगी । ऐसा हम मानते है ।

दूसरी बात यह है कि भगवान की महिमा संतो ने अधिक गाया है । अपने ऋषि-मुनि भी नेति-नेति कहकर छोड दिये है । तो हमे इसका वर्णन शब्दो में कैसे कर सकते है ।

आ अवसर करुणानिधि, करुणा बहु कीधी (२)
मुक्तानंद कहे मुक्ति (२) सुगम करी सिद्धि..जय.

मुक्तानदं स्वामीने कहा है कि महाराजने हम लोगो के उपर कितनी करुणा किये है । इसके अधिक शब्द नही हो सकते है ।

अभी निर्गुणदास स्वामी के साथ अंदर बैठे थे । तभी बात में अपने नौ महामंदिरो में से अपना यह जेतलपुर मंदिर दो वर्ष के बाद २०० वर्ष पूर्ण होने वाला है ।अब अहमदाबाद-जेतलपुर अलग नही है । इस लिये सभी संत-हरिभक्त मिलकर ऐतिहासिक एवम् धार्मिक आधार पर अच्छा प्रबन्ध करके उत्सव मनाये । बलदेव दादा हमे लोगो के उपर प्रसन्न होगे । पी.पी. स्वामीने बात किया है कि १९८ वे वर्ष का हो गया है । अभी संक्षिप्त काल में बड़ा उत्सव मनाना है ।

गामडी गाँव में मई महिना के पहली तारीख को पाटोत्सव आयेगा । पता नही गर्मी के समय पर ही सभी पाटोत्सव आते है । ठीक जो है अच्छा है । हम सभी को भगवान की भजन करना है । बाहर कितनी गर्मी हो लेकिन हृदय में धैर्य है । लड्डु खाकर सो जाना होता है । बाकरोल तथा गामडी के चारो तरफ अच्छे गाँव है ।

व्यक्तिगत किसी की महिमा नही है । मैं बैठा हूँ । संत बैठे है । इसमें कोई भी बैठा नही है । बालासिनोर में महानुभावानंद स्वामी द्वारा निर्मित सरस सिंहासन वाला पुराना मंदिर है । कई लोग कहते है कि देव एवम् आचार्य के वचन में रहे । यह मुझे समझ में नही आता है । २१२ में किसी आचार्यने न कम न अधिक श्लोक जोडे है । तो यह बात कहाँ से प्रारम्भ हुई है । यह सत्य एवम् विचारणीय बात है । आचार्य का अलग से कोई अस्तित्व ही नही है । देव के द्वारा आचार्य है । आचार्य पद भगवानने बनाया है । सबकी अपनी गरिमा है । मैने कहा आप का यह मंदिर प्राचीन है । आज आचार्य पद पर बैठा हूँ । ४० साल के बाद कोई और बैठेगा । इससे पहले कोई और बैठे थे ।

परम्परा में कई लोग बदल गये । संत बदले, हरिभक्त बदले, सिंहासन पर बैठे देव बदले ? समझाना यही है भगवान से जुडकर रहना है कोई यह माने कि यह पर मेरा है । तो वह समाप्त है । मैं लिखकर देदू । नोटरी लेकर आइये । हस्तप्रत में लिखकर देगे । किसी के बाप का यह पद नही है । देव का है ।

जितना अच्छा हो रहा है । वह देव के कारण है । इसी सिद्धान्त पर मै जीता हूँ और जीउगा । देव का बनकर रहने में अच्छा है । मुक्तानदं स्वामीने भीगाया है । हरि के गुणगान से महानता मिलती है । भगवान का नाम लेने से कल्याण होता है । हम लोगो के अधिक आ जाने से भगवान मोटे नही हो जायेगे । भगवान तो भगवान ही रहेगे । दुनिया का क्रम है । संसारी व्यक्ति को कभीकभी आभास हो जाता है कि हम एक से दो दोसे बीस इसके बाद वह अपने को भगवान मानने लगता है । ये बलदेव दादाजी, ये नरनारायणदेव जो हमे मिल् है । उसे छोडकर नही जाना है। हमे किसी का नही बनना है । भगवान का बनकर रहने में ही सुख है ।

ऐसे हजारो उदाहरण मैने देखा है । ये सभी लोग सामने बैठे है । बोल नही रहे है किसी दिन का क्या होता है । मंदिर बना है । तब से सुरक्षा में लगे है । भगवान का होकर रहे है । यह सबसे बड़ा त्याग है । त्याग की परिभाषा ही यही है । भगवान के लिये जो करे वही ही अच्छा है । यह बल और् स्वाभिमान बलदेव दादाने दिया है । इस प्रांगण के कणकण से बल मिलता है ।

महाराज यहाँ १०० से १५० बार आये होगे । इस गणना के लिये हाँ कौन बैठा था । इस भूमि का एक एक कण रमण रेती है । यह वास्तविक्ता है । कुछ लोग रेती में लोटने जाते है । अधिष्ठाता देव ही सर्वोपरि होते है । लेकिन हम लोगो के लिये यह रमण रेती है ।इसमें ही लोटना है । संत कहते है । ये देव प्रतापी है । भगवान प्रतापी है । यह बड़ी बात नही है । हमें भगवान के आसरे पर कर प्रतापी बनना है । हमे मनुष्य होकर प्रताप बताना है । भगवान संकलप्क रे । इतने में बहुत कुछ हो सकता है । इसी लिये भगवान को भगवान कहते है । भगवान तो खम्बे से प्रगट होकर भगवान कहलाते है । हम जिस दिन मनुष्य हो जायेगे । कंठी का पहनना सत्य हो जायेगा । महाराज ने कुँवा, वाब, तालाब, अन्नक्षेत्र मानवता के आधारपर सभी को सुखी करने के लिये किये है ।

कोईने दुखियो रे देखी न खमाय
दाय आणी रे, अभि आकला थाय...
अन्नधन वस्त्र रे, आयी ने दुख टाले,
करुणा दृष्टि रे, देखी वान ज वाले....

हमें कठोर नही बनना है । किसी का दुख देखकर उसके दुख को दूर करने का प्रयास करना चाहिए । हममें महाराज के लिये प्रतिशत गुण आते है । इस पर विचार करना चाहिए । किसी के समस्या के निवारण का प्रयास नही भी करे यह बडी बात नही है । लेकिन उसमें अवरोध करे यह बड़ी बात है । भगवान तो बड़े होते ही है । लेकिन हमे भगवान का बनकर भगवान की कृपा से हमे बड़ा बनना है ।

आप सभी श्रम और उद्यम करते है । बगल में के.पी. स्वामी खडे है । पीछे भाई-बहन तपस्या कर रहे है । विना प्रभाव के कोई यहा आता होगा । क्या ये लोग खडे होगे । हरिभक्तो की महिमा है । दण्डवत करना चाहिए । आप कोई खाली है । दुकान-मकान बंद करके आये होगे । यह मोबाईल कई बार बजा होगा । उसे बगल में रखे होगे । भगवान मिले है । इस लिये आये है । यह हरिभक्त धन्य है ?

गर्व है कि नरनारयणदेव देश गद्दी हमेशा देव की रही है । निष्कलंक है और रहेगी । संत देव के है । हरिभक्त देव के है । इसलिये हमारा सीना ५६ का छोटा हो जाता है । गर्व तो होगा ही । यह कहाँ मिलेगा । कुछ लोग बस में

किराये वाले लोगो को भीड जमा करते है। कल हम देखे दो-दो फुट की दूरी पर बैठे थे । इस दिखावे का क्या मतलब है । हम यहाँ पर ऐसे बैठाते तो कैसा लगता ? सत्संग के भीड में रहने के लिये महाराज बले है। प्रात: अभिषेक तो करना ही था। इस लिये बच-बच कर निकले थे। शेष तो मेरा टाँग कल जाती। मुक्तराज स्वामी हो ऐसा ? संतो के साथ हमेशा हँसते रहे।

आनंद को नही ला सकते है। आनंद हृद यमे से, नाभि में से आती है। रोना कर सकते है। यह उपर से आती है। कई लोग भगवान की बात करते है। ऐसा करके (रोने का दुखी भाव) रोने लगते है। हमको ऐसा लगेगा कि यह भगवान की बात करता है। स्वयं को तनाव हो जाता है। रोते-रोते कहता है । कि भगवान के बाद धाम में गये । भगवान का धाम था। आप का नही था। तुम क्यो दुखी हो रहे हो। हम अपने अपने कमरे में जाते है। माया दिखाकर रुम में गये। बांसुरी देख कर बैठे। ऐसे वक्ता को श्रोता भी ऐसे ही मिलते है । आप को लगेगा कितना भावुक Emotional है । वह हँसेगा । और हमे रोयेगे । यह व्यक्तिगत नही कह रहा हूँ। सभी अपनेनुसार कार्य करते है । लेकिन बात यह है कि भगवान जैसे भगवान मिलनेप र आनंद मे रहे। ऐसा हमारा मानना है।

ये के.पी. स्वामी, पी.पी. स्वामी, आत्मप्रकाश स्वामी ने नया भोजनालय बनाये है। उसमें १७ प्रकार के भोजन बने है। दो बार भोजन करने की कोई चिंता नही है । भगवान के जन्म दिन पर उपवास होता है। पहली आटा खोजने जाना पडता है। नरनारयणदेव का प्रगट दिन एक ऐसा है कि लड्डू खाने को मिलता है। वसंत पंचमी हो, कुछ और हो, आज यहाँ आये है । यह सब आनंद है । इससे अधिक और क्या ? जितना हो सके भजन करना चाहिए। हम लोगो जैसा भाग्यशाली कोई नही है । भगवान का सानिध्य है। भगवानका घर है। भगवान के आश्रय में बैठे है । भगवान आशीर्वाद दे । विशेषकर यजमान परिवार और सभी का मंगल हो । ऐसा नरनारायणदेव और बलदेवजी दादा के चरणो में प्रार्थना है।

श्री स्वामिनारायण मंदिर गामडी का १९५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव के अवसर पर प.पू. लालजी महाराजश्री ता. १-५-२०२४ : अपने गामडी मंदिर के १९५ वे वर्ष की पूर्णता हो रही है। इस पर गर्व है। इतने वर्षो तक मंदिर तथा सत्संग को हरिभक्तो ने सुरक्षित रखा है। यहाँ के हरिभक्त गाँव में रहते है। शहर या विदेश में हो ये लोग गाँ वके सत्संग से जुडे रहते है। ये लोग अपनी जड नही भूले है। अपने जीवन तथा सत्संग का प्रारम्भ कहाँ से हुई है । उसे याद रखना चाहिए । यह ज्ञान अपने बच्चो बच्चियो को अवश्य दे तथा प्रोत्साहित भी करे।

यहाँ का सत्संग नरनारायणदेव की निष्ठा का सत्संग है। आनंदानंद स्वामीने इस मंदिर को इतना सुदंर बनाकर दिये है । इसे सुरक्षित रखना हमारी तथा आनेवाली पीढीयो का है। सत्संग की जिम्मेदारी यहाँ के हरिभक्तो की है। प्रत्येक परिवार किसी भी रुप में भगवान से जुडे। ऐसा प्रयत्न करना है। इसी की समैया और उत्सव करते है । स्वामिनारायण भगवानने गाँव-गाँव, शहर-शहर उत्सव समैया किये । लोगो को भोजन करवाये । प्रत्येक जगह पर जीव को भगवान से जोडने का प्रयास करे करे ? यह समैया उत्सव वारसागत रुप में मिला है।

पिछले कई वर्षो से हम लोग देख रहे है कि यहाँ के हरिभक्त, अहमदाबाद देश के हरिभक्त उत्सव-समैया का लाभ ले रहे है। ''पर्व'' उत्सव से प्रारम्भ करके जब कि जेतलपुर का २०० वर्ष पूरा होने जा रहा है। इस उपलक्ष्य में कई कार्य होने वाले है। इसमें से एक कार्य यह करना कि सत्संग मात्र मंदिर तक ही नही रहे। घर-घर में होना चाहिए। सोसायटी में भी होना चाहिए । मित्र मंडल, परिवार के सदस्य को एकत्र करके सत्संग करना है। घर-घर प्रत्येक

रविवार को सुबह या शायंकाल में एक घंटे सत्संग होना चाहिए । केवल गामडी में ही नही पूरे जेतलपुर क्षेत्र के चारो तरफ धून-कीर्तन सत्संग का प्रबन्ध होना चाहिए । इसी कारण से भगवान के नाम का स्मरण होगा ? क्योकि यह उत्सव बार-बार नही आता है।

हम सभी भाग्यशाली है कि भगवान द्वारा बनवाये गये । सभी नव मंदिरो का २०० वर्ष का उत्सव देखने का अवसर मिल रहा है । अहमदाबाद, मूली एवम् भुज तीन मंदिरो का उत्सव देख चुके है। महाराजने ९ मंदिर बनवाये है। उसमें अपने हाथ से मूर्ति प्रतिष्ठित किये । इसमें से पाँच महा मंदिर अहमदाबाद देश उत्तर विभाग अपने हिस्से में आते है।

जेतलपुर उत्सव के बाद पाँच वर्ष में अपने गामडीग ाँव में भी २०० वर्ष पूरा होगा । उसकी तैयारी रखे । देश विदेश में निवास करने वाले यहाँ के निवासी जेतलपुर में २०० वर्ष की तैयारी का समय आ गया है। महाराजश्री द्वारा जो सूचना मिले । उसी अनुसार मंदिर में प्रबन्ध हो । उसमें तन, मन, धन से छोटा-बड़ा सहयोग देकर लाभ ले।

आप की पीढी का सत्संग है । इससे अधिक कुछ नही कहना है। महाराज इस गाँव में पधारे थे । इस गाँव में आने पर शांतिसुख का अनुभव मिलता है । यहाँ के हरिभक्तो का अपना पन सदैव बना रहा है। महाराज आप सभी को सुखी करे । मंगल करे । भजन-भक्ति करने की शक्ति दे। ऐसा नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना है।

हर्षद कोलोनी मंदिर के ६ठ्ठा वार्षिक पाटोत्सव अवसर पर प.पू. लालजी महाराजश्री ता. ५-५-२०२४ : अहमदाबाद पूर्व विस्तार का सत्संग कुछ वर्षो से बढता ही जा रहा है। इसका मुख्य कारण हरिभक्तो की निष्ठा श्रध्धा तथा नरनारायणदेव में प्रति बढता समर्पण है ।अपने हर्षद कोलोनी को सत्संग छोटे स्तर से आज वृद्ध होता जा रहा है। आज इस ६ वर्ष हो गये । सभी लोग निष्ठापूर्वक सत्संग कर रहे है।

अपना कर्तव्य बनता है कि भविष्य की पीढी को अपनेमंदिर की जिम्मेदारी है और सत्संग प्रभावी बनाये । उनके विचारो को आगे लाने का अवसर प्रदान करे । इस लिये आज पाँच युवको को मंदिर समिति मे चयन किया गया है ।उन्हे शिक्षित करके आगे लाने की वृत्ति पैदा करे । बात करने वाले कई लोग मिल जायेगे । विचार पर चलने वाले कम है । उन्हे व्यवहार में लाना है । कई वर्षो से अहमदाबाद तथा देश विदेश में छोटे-बड़े गाँवो में सत्संग बढ रहा है । इस कारण से युवको को सच्चा मार्ग तथा निर्णय लेने की शक्ति का विकास करना अति आवश्यक हो गया है। नरनारायणदेव के गद्दी के प्रति एकता का भाव बना रहे। सभी लोग मिलकर मंदिर के विकास में भाग ले । नरनारयणदेव के प्रति सत्संग का भाव बढे । इस ध्येय से कार्य करना है। हम सभी भाग्यशाली है कि अपने भाग में ऐसा सत्संग मिला है।

नियमधर्म सभी लोग रखते है। भजन भक्ति करते है। देव को धर्मादा निकालते है। जहाँ पर सिद्धान्त की बात आये । वहाँ पर छूट छाँट नही रखे । भूल हो तो ध्यान रखना चाहिए । वर्तमान समय में कई लोग मूल सम्प्रदाय के नाम से भगवान स्वामिनारायण के नाम से गैर मार्ग पर ले जाने का प्रयास करते है। यह बात सत्य है। इसको दबा कर नही रखना चाहिए । स्वच्छरूप से बात करे । यदि सिद्धान्त मजबूत नही होगा तो । नींव मजबूत नही होगी तो किसी भी दिशा में बह सकते है।

नियम, निश्चय भगवानने जो सीख दी है । यह शिक्षापत्री है । देश विभाग का लेख है । वचनामृत है । सत्संगिजीवन आदि शास्त्रो में भगवानने आदेश दिये है। उसे पढे । समझे तथा उसी प्रकार व्यवहार भी करे । संसार में कथाकार लोग अधिक है । कथा कहकर गलत शिक्षा देते है। गलत मार्ग पर ले जाने वाले लोग अधिक है। सत्य

मार्ग यह है कि जो भगवान के शरण में ले जाये । यह किसी व्यक्ति या व्यक्ति प्रधान सम्प्रदाय नही है । भगवान के द्वारा स्थापति स्वरुप-देव पूजा का सम्प्रदाय है और रहेगा । कई लोग प्रश्नक रते है कि सही गलत कैसे निर्धारित कर सकते है । बुर्जुग लोग बैठे है । उन्हे कष् टनही है । लेकिन युवको का यह विशेष प्रश्न है । जहाँ पर ऐसा लगे कि भगवान से अधिक व्यक्ति की प्रधानता अधिक है । वहाँ से खडे होकर चले जाना चाहिए । भगवान की प्रधानता होनी चाहिए । कथा धून भजन यह सब भगवान को खुश करने के लिये होता है । नकि अपनी वाह-वाही कराने के लिये कथा एवम् सत्संग से व्यक्ति का भगवान के प्रति नजदीकी बढती है । इतने सभा किये । यह किया वह किया अपनी प्रशंसा के लिये सम्प्रदाय नही होता है ।

अच्छे में अच्छा, बड़े से बड़ी उपलब्धि यह है कि लोगो को भावना के प्रति एवम् मंदिर के प्रति लगाव पैदा करें । यह जिम्मेदारी केवल हमारी तथा संतो की ही नही है । हम सभी की है । अपनी यह भी जिम्मेदारी होती है । कि मूल सम्प्रदाय के सिद्धान्त स्थायी बने रहे । सिद्धान्त के साथ भगवान की समझ दे । इसके लिये देश विभाग का लेख पढे । आधे घंटे के अंदर पढ सकते है ।

स्वामिनारायण भगवानने जब दो गद्दी किये । उस समय का संविधान है । जो लेख में लिखा है । किसी भी देश का निश्चित्त संविधान होता है ।उसके नियम होते है । मह भारत में रहते है तो हम पर भारत के संविधान के नियम लागू पडते है । ट्रैफिक में लाल सिंगनल में निकलने पर दण्ड लगता है । यह नियम है । यह नियम किसी के लिये बदलता नही है । समान रुप से लागू होता है । पुलिस के गाडी पर भी यह नियम लगता है । सभी को सरकार द्वारा प्रभावी कर को भी देना पडता है । यह संविधान नियम स्कूल में से ही बच्चो को सिखाया जाता है । सही है न ? ईधर-उधर थूकना नही है । स्वच्छता बनाये रखे। यहाँ पर न जाये । वहाँ पर नही जाये । ट्रैफिक के नियम, राज्य के नियम हमें पालन करना पडता है । उसी प्रकार स्वामिनारायण भगवानने दो गद्दी बनाये है । उत्तर विभाग एवम् दक्षिण विभाग उनके संत हरिभक्त एवम् आचार्य को कैसा आचरण करना है । उस में नियम लिखे है । तो हमारा धर्म है कि उसे समझे तथा उसका निष्ठा से पालन करे ।

यहाँ पर युवक अधिक आये है । पूर्व विस्तार में जितने भाई बहन हरिभक्त यहाँ के है उन्हे ध्यान पूर्वक देश विभाग का लेख पढना चाहिए । तथा समझना भी चाहिए । अभी ग्रीष्मावकाश चल रहा है । इस समय छोटी छोटी बाल सभा, युवक सभा होती हो तो उसमें संत और श्रेष्ठ हरिभक्त सभा में इसे समझाये । महाराजश्री के ५० वें जन्मोत्व के अवर पर आचार्य वंदना महोत्सव में लिखे लेख की पुस्तिका बाहर निकाली थी ।इसका कुछ मूल्य नही रखा गया था । सबको निःशुल्क में दिया गया था । संविधान का ज्ञान सभी के समान अधिक है । यदि उस पर चार्ज होगा तो ? यह तो स्वामिनारायण भगवान का बनाया गया संविधान है । सभी को जानना आवश्यक है । प्रत्येक हरिभक्त विशेषकर युवक इस सिद्धान्त से शिक्षित हो । समझे, सीखे और जीवन में उतारे जिससे कोई गैरमार्ग पर नही जाये । नरनारायणदेव पर निष्ठा रखे । सत्संग की नीव मजबूत करे । इसलिये यह प्रयास आवश्यक है ।

६ठ्ठा पाटोत्सव के अवसर पर यजमान परिवार सहित अधिक संख्या में आये हरिभक्तो ने सुंदर लाभ लिया था । इस अवसर पर महाराज से प्रार्थना करे कि दिन-दिन सत्संग वृद्धि प्राप्त करे । भगवान पर निष्ठा दृढ बने । आज इस पवित्र दिन पर नरनारायणदेव के चरणों प्रार्थना है ।

रे श्याम ! आप ही सच्चे धन

– नटूभाई बी. पटेल (राजपुरवाले-कैनेडा)

सम्प्रदाय के इतिहास के पेज उलटने पर श्रीहरिकृष्ण चरित्रामृत सागर ग्रंथ में इस प्रसंग के उपर नजर एक जाती है। स.गु. माधव स्वामीने नजर से देखकर यह प्रसंग लिखे है।

वि. संवत १८७६ में ज्येष्ठ सुद एकादसी का दिन था। इस दिन भीमा एकादशी थी। श्रीजी महाराज संतो के साथ दंढाव्य देश के ऊंझा, सिद्धपुर, विसनगर में विचरण करके वीजापुर होकर जेतलपुर पधारे थे। देव सरोवर के पास महल में रहे थे। वहाँ पर पहले से संत लोग आ गये थे। देव सरोवर के बरगद के वृक्ष के नीचे बैठे हुए थे। श्रीजी महाराज देव सरोवर में स्नान करने गये थे। इसी मध्य में स.गु. मुक्तानदं स्वामी सरोवर के किनारे बैठकर श्रीजी महाराज की प्रशंसा में पाँच कीर्तन लिखे। श्रीजी महाराज के आने की प्रतिक्षा कर रहे थे।

कुछ समय के बाद सभा बैठी श्रीजी महाराज सभा में पधारे। सभा में कुछ समय पहले स.गु. मुक्तानदं स्वामी रचित कीर्तन स्वामी खुद गा रहे थे।

हे श्याम आप सच्चे धन है.... इतने में श्रीजी स्वामी कीर्तन को स्वयं बंद कराये। सभा में संत, हरिभक्त पार्षदो की अधिक भीड थी। अहमदाबाद से श्री दामोदरभाई, श्री नथ्थु भट्ट आदि श्रेष्ठ हरिभ्कत भी थे। इस सभा में गामडी के माधवजीभाई पटेल अपने पत्नी के साथ पधारे थे। रुडीबाई नया गृह संसार में आयी थी। सुदंर वस्त्रपहन कर आयी थी।

श्रीजी महाराज की नजर रुडीबाई के उपर गयी। रुडीबाई से बोले आप सत्संगी है। नही। बनना है। गंगा माँ से कहो कि इन्हे वर्तमान दे। श्रीजी महाराज बोले ऐसे वर्तमान ही दिया जाता है। तो महाराज ! मैं क्या करके वर्तमान लूँ। तो सुनो यदि सत्संगि बनना है तो यह रंगीन वस्त्र बदलने पडेगे। संसार के सभी पुरुषो को माधव सहित भाई पिता मनना पडेगा स्वीकार है।

हा, महाराज ! स्वीकार है। सफेद कपडा दो। नाई बुलाकर सिर के बाल कटवा दो। देर मत करो। मैं भाग्यशाली हो गयी। मुझे महाराज ! घर, संसार, वैवाहिक जीवन छुडाकर भक्ति में आने की आज्ञा दे। इससे मेरा जीवन धन्य हो जायेगा। अंर्त्यामी शीघ्रता करे। दया करे। श्रीजी महाराज ने कलश मगाया। रुडीबाई से रखवाये। फिर बोले। रुडीबाई इस प्रकार घर-संसार छोडने का निश्चच कैसे आया ?

महाराज गामडी से यहाँ दर्शन करने आये थे। आप का दर्शन मिलते ही मन में कुछ आप की महानता, दया, शक्ति का विश्वास आ गया। तथा स.गु. मुक्तानदं स्वामी के कीर्तन के शब्द मेरे हृदय को छू लिया। सच्चा घन क्या है ? इसका ज्ञान मिला। "रे श्याम तमे साचु नाणु वीजे सर्वे दुखकारक" अब तो ऐसा लग रहा है। यह भजन स्वामी नही मै गा रही हूँ। आप की शक्ति से भले स्वामीजी गाये हो। महाराजने कहा ! रुडीबाई लोक लाज तो नही रोकेगा ? मै पागल हो गयी हूँ। अपने उद्देश्य में डूब गई हूँ। आप की उपासना समझ में आ गयी है। आप प्राणाधार है। सुनी थी मीरा दिवानीथी कृष्ण की आज मुझे विश्वास हो गया है।जगत नाशवान है। आप भवसागर पार कराने वाले नाविक है। कृपानाथ मेरी नाव पार उतारे। लोक लज्जा मुझे नही रोक सकती है। रुडीबाई की कम उम्र थी। गाँव की समझदार नारी थी। अधिक प्रसन्न हुए। सभा में बैठे अहमदाबाद के भक्त नथ्थुराम भट्ट की पत्नी मर गयी थी। उनको समझाकर बोले-रुडीबाई की तरह समझदार बनो। नाशवान संसार में आसक्ति नही रखे। पत्नी की विरह से बाहर निकलो। कल्याण के मार्ग को अपनावो। आप तो ज्ञानी है। शास्त्रो के वक्ता है। हमारे आश्रित है। इस प्रकार नथ्थूराम भट्ट को ज्ञान का मार्ग बताये। संसार की माया से बाहर

निकाले । पत्नी के वियो गमें से भक्ति मार्ग का उपदेश दिये ।पत्नी के विरह की उपचार किये ।

बाद में श्रीजी महाराजने रुडीबाई से बोले आप धन्य है । धन्य है । आप का वैराग्य भाव । धन्य है आप की समझदारी । धन्य है । आप की निष्ठा । आज से आप हमारे पक्के सत्संगि हो गयी । रुडीबाई को वर्तमान देकर श्रीजी महाराजने कहा । ये सब हमारी परीक्षा थी । यह गलत समझना विवाह के अळागा भाई-पिता समझना । धर्म का पालन करना । भक्ति करना । संसार में रहकर त्यागी जैसे नियम धर्म का पालन करना । आप का अवश्य कल्याण करेगे । कीर्तन भक्ति नवधा भक्ति में श्रेष्ठ भक्ति है । नित्य विधि में गाते समय चेष्टा के पद सुनने को मिला है । नंद संतो को पद में कितनी शक्ति है । यह ज्ञात हुआ ।

प्याज - लहसुन क्यो नही ?

– शैलेषकुमार जी. पटेल (प्रांतिज)

शिक्षापत्री श्लोक १८६ में महाराजने आज्ञा की है कि जो ब्राह्मण है उन्हे प्जाय लहसुन नही खाना चाहिए। यह उनके अखाद्रय पदार्थ है।

यह श्लोक केवल ब्रह्मचारी के लिये नही है । सभी के लिये है । यह बात सभी आश्रितो पर लागू होती है । सत्संगी आचरण से ब्राह्मण माना जाता है।

कई सत्संगियो के यहाँ तो प्याज अच्छी है । ठंडक में लहसुन पर रोक नही है । कहीं लोग शादी के अवसर पर भोजन में ब्याज लहसुन का प्रयोग करके पकवान का स्वाद बढाते है।

शतानंद स्वामी आयुर्वेद के शब्दो को जोडकर कहते कि धन्वंतरी तथा निंघूट नामक शास्त्र में प्याज मुख खराब करती है । जीभ और कंठ में छाले करती है । शरीरका रक्त पतला करती है । रक्त पतला होने से थायराईड बढता है । बी.पी. घटती एवम् बढती है । क्रोध जल्दी से आता है । क्रोधी व्यक्ति विवेकशून्य हो जाता है । सभी के सामने गुस्सा करने लगता है । कभी कभी गुस्से में प्राणघातक प्रहार भी कर देते है।

आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार समुद्र मंथन के समय भगवान ने मोहिनी स्वरुप में चक्र सुदर्शन से ''राहु'' नाम के राक्षस का अमृत से पूर्ण सिर को काट डाला था । पृथ्वी पर पडे उसके रक्त की बूंदो से लहसुन पैदा हुआ था । इस लिये यह अखाध्य है । और तामसी गुण वाला हो ता है । धर्मशास्त्र की दृष्टि से देखे तो प्याज-लहसनमें दुर्गंध होती है । इस मनुष्य का मन विकृत हो जाता है । दुर्गंध देव को प्रिय नही है । हम देव स्थान पर अगरबत्ती जलाते है । सुगंधित पुष्प-हार चढाते है । प्याज-लहसुन की गंध देवो को प्रिय नही है।

गीता में श्रीकृष्ण भगवानने रजो, तमो और सतो गुण वाले आहार बताये है । तामसी आहार सतोगुणी को नही खाना चाहिए । सतो गुणी भगवान के भक्त प्रतिदिन तामसी वस्तु खाये तो उनकी प्रकृति बदल जाती है । तमो गुणी होजाता है । यदि भोजन मे लहसुन-प्याज पडा हो तो उसे ग्रहण नही करना चाहिए ।

याज्ञवल्क्य ऋषि कहते है कि प्याज-लहसुन खाने वाले को शराब पीने का पाप मिलता है । स्वामिनारायण सम्प्रदाय के अलावा अन्य सम्प्रदायो में प्याज-लहसुन वर्जित है । वैष्णव धर्म में निषेध है । हिन्दु धर्म के प्राचीन शास्त्रो में तामसी आहार की रोक है । जैन धर्म में भी निषेध है । वैसे तो प्याज-लहसुन सभी सम्प्रदाय में वर्जित है।

માણસા મંદિરનાં પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીની આરતી ઉતારતા અને સભામાં
આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

દરબારગઢ (મોરબી) મંદિરનાં ૧૫૦ માં પાટોત્સવ પ્રસંગે
ઠાકોરજીની આરતી ઉતારતા અને સભામાં
આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

ન્યુ નિકોલ નિર્માણાધિન મંદિરના ઉપલક્ષમાં આયોજીત
સત્સંગ સભામાં અમદાવાદ મંદિરના
પૂ. મહંત સ્વામી અને હરિભક્તો

પેથાપુર મંદિરના ૨૦ માં પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીની આરતી ઉતારતા અને સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી અને પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી

સરઢવ મંદિરમાં પુનઃ મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા કરતા અને સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

ઘમીજ (તા. દહેગામ) મંદિરના રજત જયંતી મહોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીની આરતી ઉતારતા અને સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

ઉનાવા મંદિરના ૪૨ માં પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીની અન્નકૂટ આરતી ઉતારતા અને સભામાં
આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

ધોળકા મંદિરના ૧૯૭ માં પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીની આરતી ઉતારતા
અને સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી

પારસીપની (અમેરિકા) મંદિરના ૯ માં પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીનો અભિષેક કરતા અને બાળ મંડળ સાથે પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી

નારણપુરા (અમદાવાદ)મંદિરમાં ખીચડી ઉત્સવ પ્રસંગે સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી

હર્ષદકોલોની (બાપુનગર) મંદિરનાં ૬ઠ્ઠા પાટોત્સવ પ્રસંગે અન્નકૂટ આરતી ઉતારતા અને સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી

ન્યુ રાણીપમાં શ્રીહનુમાનજીની આરતી ઉતારતા અને સૂચિત મંદિરમાં યુવકો સાથે પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી

બોપલ મંદિરના ૧૯ માં પાટોત્સવ પ્રસંગે સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી

नाम - धर्मादा

– गंगारामभाई एम. पटेल

श्री स्वामिनारायण भगवानने शिक्षापत्री श्लोक संख्या १४७ में लिखे है कि गृहस्थ आश्रम वाले सत्संगि को अपनी आय का दशवाँ भाव निकालकर श्रीकृष्ण भगवान को अर्पण करना चाहिए । यदि कम आय है तो वीसवे भाग को निकालना चाहिए ।

आय में धन और धान्य बताये गये है । कृषक हरिभक्त की आप अनाज होता है । जोनौकरी करते या व्यापार वाले है उनके धन माना जाता है । अपनी आय का दशवाँ भाग भगवान को अर्पण करे । गरीब है तो २० वाँ भाग दान दे । सुखी होने के लिये आराध्य देव को दशवाँ भाग अवश्य दे । यही धर्मादा कहा जाता है । धर्महेतु देना । धर्मप्रचार के लिये आराध्यदेव को दे देना उसे धर्मादा कहते है।

अपने-अपने देश के मंदिर में अर्थात् उत्तर विभाग के हरिभक्त अहमदावाद श्री नरनारायणदेव के कोठार में तथा दक्षिण विभाग के हरिभक्त वडताल श्री लक्ष्मीनारायणदेव कोठार को धर्मादा अर्पण करे । इसकी सम्पूर्ण जिम्मेदारी आराध्यदेव श्री स्वामिनारायण भगवान स्वीकार करते है।

जो गृहस्थ अपने धन मे से परमात्मा का भाग निकालता है । वृह गृहस्थ सदैव सुखी रहता है । उसका धन पवित्र हो जाता है । वर धन कभी कुमति नही देता है । पवित्र धन सदैव सम्मति देता है । पवित्र धन एकता बनाये रखता है । जहाँ पर एकता वहाँ सुब कुछ अच्छा होता है । घर के अंदर एकता कम हो तो समझे घन पवित्र नहि है । इसको पवित्र करने के लिये देव द्रव्य के रुप में निकालना चाहिए । जिसे सुखी रहना उसे अपनी आय को धर्मादा निकालना चाहिए । नियमित धर्मादा निकालने वाले रोडपति से करोपडति बने है। इसका उदाहरण भी है।

एक सत्संगी का उदाहरण

एक सत्संगी हरिभक्त की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी । प्रातः उठकर पेपर घर-घर देता था । इससे उसका जीवन चलता था । यह नरनारायणदेव का प्रतिदन दर्शनक रता था । एक बार इसने एक संत से अपनी व्यथा बतायी । संत को दया आ गयी । संतने आय का दशवाँ भाग नरनारायणदेव के चरणों अर्पित करने की सलाह दिये । संत की बात का विश्वास रखकर वह गृहस्थ नरनारायणदेव के चरणो में आय का दसवाँ भाग अर्पण करने लगा । भगवान की कृपा हुई । सोनी की दुकान में नौकरी मिल गयी । प्रभु की कृपा से क्षमता बढी । वह अपनी दुकान रखी । देखते-देखते वह करोडपति बन गया ।

उपनिषदो, शास्त्रो में लिखा है कि आपकी आय में माता-पिता का भाग, ब्राह्मण का भाग, राजा का भाग और देव का भाग है । राजा नियम से, दरोडा से ले सकती है । मा-पिताकी यदि आप सेवा कर रहे है तो उनकी इच्छा हो तो यात्रा कराये । यह माँ-बाप का भाग हो जाता है । उत्सव, समैया में ले जाये । मंदिर मे थाल-आरती कराये । ब्राह्मण को घर पर बुलाये । हवन होम करे । ब्राह्मण को दक्षिणा दे । अब रहा देवका भाग तो

देव कभी आप के घर आकर हिस्सा नही माँगते है। देवरुऋषि कहते है कि अपनी आय का चार भाग करे। एक भाग देव को दे दे। एक भाग बचत करे। शेष तो भाग से व्यवहारिक जीवन बिताये। अंगिरा ऋषि ऐसा कहे है कि सुख चाहने वाले गृहस्थ को देव का भाग सर्व प्रथम निकाल देना चाहिए। धर्मादा का अन्न और धन घर में भी नही रखना चाहिए। धर्मादा की वस्तु यदि सामान्य वस्तु में मिल जाती है तो वह कष्ट प्रदान करती है। सुदामा के भाग्य में सुख था। सम्पत्ति थी। लेकिन धर्मादा अर्थात् भगवान का भाग उनके पेट में चला गया था। परिणाम स्वरुप वह दरिद्र हो गये।

देव द्रव्य हलाहल विष समान बताया गया है। इसे घर् में उपयोग नही करना चाहिए। धर्मादा देना हो चालिसवे भाग से कम नही देना चाहिए। श्रीहरि कहते है।

''जे जे उद्यमथी तमे कमाओ,
जो शिष्य साचा मुजना गणाणो,
दशांश-विशांस गजा प्रमाणे,
देवार्थ देजो धन तेह टाणे।
कुटुम्बी माहे जे जन होय,
ते बाल्ल, वृद्ध जवान होय,
प्रत्येक नामे गणी आठ आना,
देजो गुरुने प्रतिवर्ष दान.''

देव मंदिर के निर्वाह के लिये धर्मादा है। और आचार्यश्री के व्यवहार के लिये भेट है। जो प्रतिवर्ष आज्ञा की है। वर्तमान में पच्चीस रुपया है। प्रत्येक सत्संगि व्यक्ति दीठ दे इसी में सुख और श्रेय है।

हरि मंदिर में यदि गद्दी मंदिर से दूर के मंदिरो में आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से संतो, हरिभक्तो सत्संग या धर्मादा के उद्देश्य से पहुँचे। तो वह मंदिर की पक्की, रसीद ले जाते है। यह मुख्य मंदिर में जाता है। धर्मादा आचार्यश्री के नाम वाली होती है। धर्मदा लाखो का दे। यदि नाम भेट का पैसा नही देते है तो सम्प्रदाय के सदस्य नही माने जायेगे।

देव का भाग देव को दे। नही तो डॉक्टर, वकील, जेब कतरे, चोरी, से कम हो जायेगा। इससे अच्छा देव को देने में क्या दोष है। दूसरी के अधिकार की वस्तु नही ले सकते है तो देव के अधिकार का कहाँ पचेगा। दशवाँभाग हरि को अर्पण करना चाहिएए। यदि बचाते है तो यह लोभ का लक्षण है। इस श्रीहरि की आज्ञा मानकर देव द्रव्य अपने व्यवहार मे नही ले। यह सत्संगि मात्र के लिये श्रेष्ठहै।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर वैशारव सुद-१५ सत्संग सभा, ठाकुरजी का थाल, संत हरिभक्तो की रसोई के यजमान श्री प.भ. अशोकभाई हरगोवनदास पटेल, ह. पुत्र जैमिन अशोकभाई पटेल, हैप्पी अशोकभाईप टेल, शौर्य अशोकभाई पटेल परिवार (रामनगर वाले)

श्री नरनारायणधेव के शिरवर के उपर ध्वजा के यजमान श्री प.भ. पार्थ सुरेशभाई पटेल - मुरवी परिवार - कलोल

जमीयतपुरा श्री प्रभाहनुमानजी मंदिर के नये महंत स्वामी की नियुक्ति

जमीयतपुरा श्री प्रभुहनुमानजी मंदिर के नये महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी श्री यज्ञप्रकाशदासजी (कलोल पंचवटी महंतश्री) को नियुक्त किया गया है।

अपने हरिंमदिर तथा प्रसादी के स्थान (सादरा-वासणा देश)

– बिपीन पटेल (गांधीनगर)

गांधीनगर जिला के सादरा-वासणा देश में साबरमती नदीके पूरवी किनारे पर कई प्रसादी के धाम है । तथा हरिमंदिर भी आते है । आईये ऐसे सादरा-वासणा देश के तीन गाँवो के मंदिरो का महात्म समझें ।

गांधीनगर से लगभग १० कि.मी. दूर नया धरमपुर गांव स्थित है । गांधीनगर से चिलोडा जाते समय लेकावाडा गांव से बाये हाथ पर सर्व प्रथम धरमपुर गाँव आता है । वहाँ पर नूतन हरि मंदिर का दर्शन मिलता है । इसकी विस्तृत सूचना निम्नलिखित रुप में है ।

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर, नवा धरमपुर (भंडिया) हरि मंदिर दर्शन :

लगभग ५-६ पीढी पूर्व गाँव में एक दरबार हरिभक्त स्वामिनारायण का सत्संग बना । दरबार प्रांतिज गाँव से आये थे । ठाकुरो की कुलदेवी महाकाली माता की पूजा होती थी ।

जो सत्संगि भक्त बने । उनके कुल से सत्संग विकसित हुआ । उनको एक घर गाँव के मध्य मे भी था । वह घर कच्चे मिट्टी एवम् नलिये से बना था । जो मंदिर बना दिया गया था जिस में प.पू. आचार्य महाराजश्री के हाथो से जाकर प्राण-प्रतिष्ठा करके मूर्ति प्रतिष्ठित की गयी । प.पू. महाराजश्री की गाँव में पधरामणी नही की गयी थी । इस लिये वर्ष-समय का ज्ञात नहिहै । लगभग १५० वर्ष जैसा हो गया है ।

इसके बाद उनके कुल में एक परम भक्त हुए । जो अहमदाबाद मंदिर में संत दिक्षा लिये थे । इस संत का नाम भक्ति स्वामी था । उनके गुरु भाई नारायणप्रसाद शास्त्री थे। नारायणमुनि स्वामी तथा नारायणप्रसाद स्वामी तथा भक्ति स्वामीके सहयोग से कच्चे मकान को तोडकर पतरा तथा लकडी का तैयार किये । संवत २००६ में बनाया गयाथा । लेकिन संयोगवस उस में मूर्ति प्रतिष्ठा संवत २०११ के फाल्गुन सुद तृतिया के दिन हुआ था ।

समय के साथ मूर्ति के उपर सोने की परत चढाई गयी थई । जो जंग गलने के कारण मंद हो गयी थी । गाँव के भक्तो संतो तथा प.पू. महाराजश्री से परामर्श करके । सोने की परत खराब होने से खंडित मूर्ति को उत्थापन विधि पूर्ण की गयी । तथा उसी मूर्ति पर अहमदाबाद में सोने की परत लगाकर तैयार की गयी ।

इस मूर्ति की पुनः स्थापना ई.स. १९८० के वैशाख सुद-१४ के दिन कगी यती थी । प.पू.ध.धु. आतार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा मूर्ति प्रतिष्ठा, यज्ञ, कथा पारायण हुआ । गाँव के सत्संगि तथा अन्य धरोहर प.पू. महाराजश्री ने पधरामणी किये थे ।

समय के साथ मंदिर के पास पूजाजी धनाजी राणाजो परम्परागत सत्संगि थे । जो खेत में नया घर बनाये थे । अपना पुराना घर मंदिर के लिये दे दिये । इससे मंदिर बडा बनाने का विचार आया ।

इसी समय श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी स्वामी (छोटे नाना) गाँधीनगर, से-२ के महंत पर थे । गाँव के हरिभक्त पू. पी.पी. स्वामी ने नया मंदिर बनाने का आग्रह किया था । उनके सहयोग से अथक प्रयास से पुराना मंदिर तोडकर नया भव्य दो मंजिले का मंदिर तैयार किया गया । जिसमें नीचे मंदिर तथा संतो की रसोई घर बनाया गया है । तथा उपर होल बनाया गया है । मंदिर तैयार हुआ सं. २०७४ माधवद नवम् ता. ९-२-२०१८ के दिन मूर्ति प्रतिष्ठा करने के लिये निश्चित किया गया । वर्तमान में अहमदाबाद कालुपुर के महंत और उस समय गांधीनगर से-२ के महंत पू. सद्गुरु पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी स्वामी के प्रेरणा से अध्यक्ष पद से उत्सव मनाया गया । ता. ७-२-२०१८ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा मूर्ति प्रतिष्ठा की गयी ।

(१) प्रथम मिट्टीके मंदिर में मूर्तियाँ : चौकोर तख्त तथा उसमें एक चक्षुवाली श्रीजी महाराज की मूर्ति, बगल में नरनारायणदेव के साथ उद्धवजी-गरुडजी

नारायणभाई सुथार के द्वारा छपी मूर्ति, नीचे बाये भाग में प्रसादी के चरणारविंद की छाप और दाहिने तरफ धर्मदेव भक्तिमाता घनश्याम महाराज की नरनारायणजी भाई सुथार द्वारा छपी मूर्ति, सभी प्रसादी की मूर्तियाँ है।

(२) ईट - पतरेवाले मंदिर में मूर्तियाँ : तख्त पर बीच में खडी श्री घनश्याम महाराज की सोना के परत से युक्त बाये कोने में श्री नरनारायणदेव और दाहिने कोने में श्री राधाकृष्णदेव, श्री घनश्याम महाराज के नीचे बाये भाग में, धर्मदेव भक्तिमाता, रामप्रतापजी, इच्छारामजी, सुवासिनी सहित बाल घनश्याम की मूर्ति तथा दाहिने तरफ चरणारविंद है।

(३) वर्तमान में नया मंदिर : बायें तरफ श्री नरनारायणदेव के मध्य घनश्याम महाराज तथा दाहिने तरफ श्री राधाकृष्णदेव विराजमान है। जो प्रथम सत्संगि हुए। वह जिस गली में रहते थे। उसके सत्संग के प्रताप से उस गली का नाम ''भक्तो कावास'' नाम रखा गया है।

लगभग १०० वर्ष पहले इनके कुल में अजोणी सत्संगि थे। गाँव के मुखिया भी थे। उस समय मुखी को एक पडवालाकर गाँव की देवी महाकाली के सामने बलि देना पडता था।

अजाजी मुखिया थे। इस कारण से इसबार उनका अवसर तो वह बलि के लिये मना कर दिये। इससे गाँव के लोग विरोध में आ गये। अजाजी बोले यदि माँ को बलि चाहिए तो मुझे चढा दे। लेकिन पडवा को नही चढाने देगे। अर्थात् हिंसा नही होगी।

उसी समय एक सोखा ने कहा मुझे पडवा की बलि नही चाहिए। आज से सुखडी का प्रसाद चढाना है। तब से पडवा की बलि बंद हो गयी।

नया धरमपुर से ३ की.मी. की दूरी पर दोलाराणा वासणा गाँव है। यह गाँव प्रसादी का है। वहँ पर प्राचीन हरिंमदिर है। वहाँ परबालस्वरुप घनश्याम महाराज की नयन रम्य मूर्ति का दर्शन मिलता है। इसकी विस्तृत जाणकारी निम्नवत है।

(२) श्री स्वामिनारायण मंदिर, दोलाराणा-वासणाः

''मंगलमूर्ति महाप्रभुश्री सहजानंद सुखरुप,
भक्तिधर्मसुत श्रीहरि समरु सदाय अनूप.''

श्रीहरि गुजरात में विचरण करते श्रीहरि साबरमती नदी के किनारे स्थित गांधीनगर के चिलोडा के पास वासणा-सादरा देश के रुप में अपने सत्संग से जुडे गाँव के हरिभक्तो को दर्शन सुख दिये। इस गाँव को वृंदावन की तरह पवित्र किये है।

वासुदेवानंदवर्णित सत्संगिभूषण अंश-२ में अध्याय-६२ में श्लोक १५ से २१ निम्नासुर महात्म्य कहा गया है।

''श्रीहरि दूसरे दिन प्रातः काल वहाँ से वासणा गाँव में आये थे। श्रीहरि का आगमन जानकर सभी हरिभक्त खुश हुए। (१६) बेचरजी, हेमचंद, केवलजी आदि हरिभक्त के हाथ में पूजा के पदार्थ लेकर, वाद्यतंत्र के साथ कीर्तन गाते-गाते श्रीहरिके पास गये। (१७) ये सभी हरिभक्त श्रीहरि का दर्शन करके उनको प्रणाम करके साबरमती के किनारे फूलवाडी में उतारा किये थे। (१८) इसके पश्चात हेमचंद, केवल, बहेचर आदि वैश्य भक्तो ने प्रभु की तथा संत,वर्णी अने पार्,दो ने प्रेम से सेवा किये थे। (१९) ब्राह्मणो के पास सेघी शक्कर वाला लड्डू बनाकर उन्हे खिलाये थे। सुगंधित चंदन पुष्प-हार वस्त्र से पूजन किये थे। (२०) भक्तनंदन श्रीहरिने कथावार्ता करके हरिभक्तो को सुख दिये थे। शायंकाल को नारायण धुन किये थे। (२१) श्रीहरि रात्रि के समय वहाँ सो गये। दूररे दिन वहाँ विसनगर जाने के लिये प्रस्थान किये।

दोलाराणा वासणा मंदिर में श्रीजी महाराज संवत १८७५ में भोजन किये थे। वह प्रसादी की थाल वर्तमान समय में श्री स्वामिनारायण म्यूजियम, नारायणफुरा में दर्शन हेतु रखी गयी है।

श्लोक १५ से २१ का सारांश (सत्संगिभीषण अंश-३२, अध्याय-६२)

पेथापुर से प्रभुप्रातः काल में ब्रह्मानंद स्वामी और प्रेमानंद स्वामी आदि साधुओ के साथ वासणा गाँव में आये थे। वहाँ के हरिभक्त प्रभु का आगमन सुनकर अति खुश हुए।

प्रभु को देखकर प्रणाम किये । तथा उनकी पूजा किये । साबरमती के किनारे प्रभु पत्थर के उपर बैठे । वहाँ पर बहेचरजी हेमचंद और केवल वैश्य प्रभु संतवर्णी एवम् पार्षदो की पूजा किये थे ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर, दोलाराणा-वासणा की मूर्ति प्रतिष्ठा संवत १९८१ ज्येष्ठ सुद पंचमी के दिन को हुआ था । मंदिर में चाँदी के सिंहासन में बिराजमान बालस्वरुप घनश्याम महाराज प्रतापी है । वहाँ के स्थानिय लोगो के अनुसार महाराज गोलो के घर पुत्र का वरदान दिये थे । गांधीनगर से १७ की.मी. दूर स्थित यह गोकुल गाँव का दर्शन करके धन्य हो ।

दोलाराणा के आगे पाँच कि.मी. की दूरी पर सादरा गाँव स्थित है। वहाँ पर प्रसादी के हनुमानजी गणपतिजी विराजे है। अति सुंदर मंदिर का दर्शन होता है।

(३) श्री स्वामिनारायण मंदिर, सादरा :

''वर्णिवेष रमणीय दर्शनम् मंदहासरुचिनामम्बुजम् ।
पूजितंर्मुसुरनरोतमैरदा, धर्मनंदन महं विचिन्तये ॥''

श्रीहरि का दिव्य वचरण का वर्णन वैराग्यमूर्ति स.गु. श्री निष्कुलानंद स्वामी का अलौकिक प्रिय शास्त्र ''भक्तचिंतामणी'' तथा ब्रह्मचारीश्री वासुदेवानंदजी के ग्रंथ ''सत्संगिभूषण'' में वर्णित है। जिस में श्रीहरि का विचरण श्रीहरि के भक्तो का नाम विगतवार मिलता है।

श्रीहरि के चरण से अंगित महाप्रसादीभूत गाँव ''सादरा'' साबरमती नदी के पूरवी तट से २५ की.मी. दूर स्थित है। इस गाँव में धुसते ही भव्य भूतकाल दिखायी देता है। गाँव के प्रवेश द्वार पर यक्षणी धाम स्थित है। इसी के नाम पर रखा है । गाँव का मंदिर अति प्राचीन है । गाँव की जनसंख्या लगभग दस हजार है । गाँव में बनाये गये अहमदशाह का प्राचीन किला भी है। यह गाँव का प्राथमिक परिचय है। अब श्रीहरि के दिव्य लीला चरित्र विचरण की बात करते है।

श्रीहरि सादरा गाँव पधारे थे । और साबरमती में ''गढडाना औरो'' नामक स्थानक पर स्नान किये थे। गाँव में जहाँ पर रुके थे । वहाँ पर आज ही श्रीहरि के चरणारविंद स्थित है। वही पर प्रसादीवाले हनुमानजी स्थित है। जो आज की दर्शन दे रहे है।

गाँव में लगभग १३५ वर्ष प्राचीन हरिमंदिर स्थित है । जहाँ पर प्रसादी के गणपतिजी-हनुमानजी आज भी दर्शन दे रहे है। आज से ८ वर्ष पहले मंदिर के जीर्णोध्धार का कार्य चल रहा था । तभी हनुमानजी और गणपतिजी को मूल स्थान से हटाकर मंदिर बनाया गया था। लेकिन हनुमानजी चमत्कार बताये थे। बुलडोजर भी इन्हे नही हटा पाया था। मशीन खराब हो गयी थी। हनुमानजी की प्रार्थना करके उसी स्थान पर रखने की प्रतिज्ञा ली गयी । तब मंदिर तैयार हो सका था । आज दो मंदिरे वाला विद्यमान है । मंदिर के नीचले भाग में बहनो का मंदिर बना हुआ है। इस मंदिर के सिंहासन के मध्य घनश्याम महाराज का दर्शन मिलता है। उन्ही के साथ नरनारायणदेव, राधाकृष्णदेव की नयनरम्य मूर्ति का दर्शन होता है। प्रथम मंजिल पर मुख्य मंदिर है। मंदिर में सुंदर नक्कशी वाले श्रीहरि घनश्याम का दर्शन मिलता है । नरनारायणदेव तथा राधाकृष्णदेव का दर्शन प्राप्त होता है। दर्शन करके धन्य बनते है। लगता है साक्षात् परब्रह्म पुरुषोत्तम नारायण भक्तो की ईच्छा पूरी करने के लिये पधारते है।

जगदम्बा स्वरुप जक्षणीमाता का द्रशन सुंदर चांदी के सिंहासन में विराजमान माताजी का दर्शन होता है। वहाँ कूपाजी के साथ संवाद करते श्रीहरि के अद्भूत प्रभाव का पता चलता है। नये मंदिर के मूर्ति प्रतिष्ठा के समय धर्मकुल का उतारा उनके घर पर ही था । प.पू. महाराजश्री से किसी हरिभक्त ने बात की थी कि पूजारी के घर शेर माटी की कमी है। तभी प.पू. महाराजश्री नेक हा था कि श्री नरनारायणदेव सभी का अच्छा करेगे। इस प्रकार उनके घर बच्चे का जन्म हुआ था । हम धर्मकुल एवम् प.पू. महाराजश्री के सदैव ऋणी है।

श्रीहरि जहाँ-जहाँ पर विचरण किये। वहाँ पर आज भी श्रीहरि के साक्षात् विराजमान होने का अनुडव होता है। यह दर्शन करके धन्य हो।

इस लेख में नया धरमपुर, दोलाराणा वासणा तथा सादरा गाँव के हरिभक्तो का अधिक सहयोग मिला है।

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "आत्मधर्म में रहने का प्रयत्न करे"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल – घोडासर)

हम सभी जीव एक लम्बी यात्रा पर है। यह यात्रा पूरी नही होती है। बार-बार भूलकर पीछे आ जाते है। महाराज लक्ष्य क्या है ? यह सभी को ज्ञात है। फिर भी भूल जाते है। भूलने का मुख्य कारण अज्ञान है। अज्ञान के कारण फँस जाता है। अज्ञान किसका है ? जो अपने को शरीर समझ रखे है। शरीर का धर्म पूरा करने के लिये प्रयास करते है। इस लिये यह यात्रा पूरी नही होती है। ''चेतन'' तत्व है। जो शरीर के अंदर है। वह हमे दिखाई नही देता है। हम शुद्धात्मा है। लेकिन जो शरीर दिखाई देती है उसे हम अपनी शरीर मानते है। शरीर धर्म में रहता है। लेकिन आत्मधर्म मे रहना मन को स्थिर रखना तो ममत्वशीध्र समाप्त हो जायेगा। मन की चंचलता एवम् अस्थिरता को देख नही सकते है। क्यो कि ? हमे सूक्ष्मता का बोध नही है। मन सदैव भरा रहता है। ९९% चाहने वाली वस्तु भरी रहती है। ज्ञान प्राप्त करने के लिये उसे खाली करना पडता है। नयी प्राप्ति के लिये पुराना निकालना पडता है। जन्म-जन्मान्तर की कामना भरी हुई है। हमारी समस्या क्या है ? नया चाहिए। लेकिन पुराना खाली नही करना है। इस संसार में चार प्रकार के व्यक्ति है।

(१) मूढ : विषय वासना के अलावा कुछ ज्ञान नही होता है। आत्यात्मिक संसार से रहित होते है।

(२) अज्ञानी : अर्थात् शास्त्र को पढे। श्रवण करे लेकिन स्वयं में परिवर्तन नही लाये। यह मान ले सब कुछ हमें आता है।

(३) मुमुक्षु : अर्थत् ज्ञात प्राप्त करने की लालसा रखे। तथा मोक्ष के लिये प्रयासरत रहे। हम सभी मुमुक्षु है। इस लिये यहाँ पर बैठे है।

(४) ज्ञानी : ज्ञानी मायाजाल को तोड देता है। ऐसा 'विरल' व्यक्तित्व कम लोगो को होता है। जो सभी नही बन सकते है। लेकिन हमे ज्ञानी बनने के लिये प्रयत्नशील रहना चाहिए। प्रयास से सब कुछ होता है। अज्ञानी''स्थूल में फसते है। मुमुक्षु सूक्ष्म में फँसते है। यहाँ पर सत्संग में मोक्ष का मार्ग प्राप्त होता है। सबसे अधिक प्रयास क्या करना है ? सबसे बड़ी बात यह है कि विषय वासना का त्याग करना है। हमे भूख लगती है तो भोजन करते है। यह बंधन कर्ता नही है। पूरे दिन भोजन का विचार आये यह गलत बात है। यह बंधनकारक है।

पाँच इन्द्रियो की आसक्ति बंधन कारक ही है। विषयो का विष, विष तरह त्याग करना चाहिए। जिस में त्याग और वैराग्य हो वह ज्ञानी है। घर छोडकर वन मे जाना त्याग नही है। वस्तु त्याग, त्याग नही है। वस्तु के प्रति कम लगाव ही त्याग है। ध्यान में बैठे और उपवास करे आवश्यक नही है। शरीर को अधिक कष्ट नही देना चाहिए। जो शरीर से अच्छे से हो वही करना चाहिए। प्रतिस्पर्धी नही करना चाहिए। इस शरीर से ही सब कुछ है। शरीर एक साधन है। इससे परमात्मा तक जा सकते है। और परमात्मा तक आने के लिये वैराग्य भक्ति

रखना पडता है। मोक्ष हेतु आत्मधर्म में रहना चाहिए। स्वयं को शरीर नही समझे। इससे अहम तत्व का नाश होता है। विषय भोग की लालसा नही रखे। दोष बुद्धि रख कर त्याग करना चाहिए। यह संसार अपना परीक्षा केन्द्र है। जो हम यहाँ पढते है। यह अपना विद्यालय है। परिणाम अपने हाथ में नही है। परमात्मा के हाथ में है। ऐसी परीक्षा दे की भटकना नही पडे। हमारे पास सभी साधन है। मंदिर है। संत है। शास्त्र है। कमजोर दुखी नही होना है। धीरे धीरे सब कुछ होता है। प्रयत्नशील रहे। सावधान एवम् जागृत रहे।

•

"पंचकणी की रोटी लूनी की सब्जी"

– कंचनबेन बाबुभाई अडालजा (रतनपुर-मूलीदेश)

उमरेठ के गरीब भूदेव महाराज का दर्शन करने के लिये पुष्पदोलोत्सव में वडताल आये थे। भूदेवने देखा की गाँव के लोग महाराज को भोजन खिला रहे है। संतो को खिला रहे है। जेतलपुर में गंगामां प्रति दिन भोजन बनाकर मुकुंद ब्रह्मचारी महाप्रभु को भोजन देती थी। यह देखकर वह सोचते कि हम कब भोजन खिलायेगे ? यह ब्राह्मण किसी के खेत में आये थे। प्रतिदिन भिक्षा माँगकर लाते थे इस में चार-पाँच प्रकार का अन्न मिला रहता था। उसे शतान्जा कहते है। वह रोटी और लूनी की सब्जी बनाकर प्रभु का भोग लगाकर खा लेते थे। लेकिन मन में भाव रहता था कि मैं कब महाराज को भोजन खिलाउगा। भूदेव इस बात से दुखी रहते थे। एक दिन हमेशा की तरह लूनी का शाग तथा शतान्जा को रोटी तैयार करने लगे।

इस तरह स्वामिनारायण भगवान ने दोपहर के समय अपने विश्राम स्थल में मुकुंद ब्रह्मचारी से कहे हम स्नान करने जाना चाहते है। ब्रह्मचारी ने कहा यहाँ पर ही प्रबन्ध है। लेकिन मुझे बाहर आज स्नान करने जाना है। महाराज ने लोटा उठा लिया। सच्चा सेवक कौन ? जो अपने स्वामी के मरजी, आवाज, इशारा तीनो को समझ सके। मुकुंद ब्रह्मचारी सच्चे सेवक थे। महाराज कह रहे है कि मुझे आज स्नान करने जाना है। लेकिन मुझे शंका है। यहाँ पर सब प्रबन्ध है। फिर भी भीड में कहा स्थान मिलेगा ? ब्रह्मचारी बोले जैसे आप की ईच्छा ! महाराज को लोटा भर कर दिये। स्वामिनारायण भगवान विश्राम स्थल से बाहर निकल गये। ब्रह्मचारी फिर भी शंका मे थे। वह महाराज के पीछे पीछे जाने लगे। हरिभक्तो का संघ आया था। उसके आगे एक आम का वृक्ष था। इसके नीचे इस भूदेव की रोटी तैया रथी। लूनी की सब्जी तैयार थी। भूदेव मानसिक पूजा करके बोला हे दयालु ! हे दीनबंधु, आप मेरा भोजन स्वीकार करे।

वहाँ पहुँच कर श्रीजी महाराजने कहा भूदेव ! हम आ गये है। आज भूख लगी है। वहाँ अभी भोजन में देर है। इसलिये इस तरफ आ गये है। भूदेव को आश्चर्य हुआ। महाराज को बैठाये और पूछे प्रभु ! यह तो पंचकणी की रोटी तथा लूनी की सब्जी आप को क्या दे। महाराज बोले लाईये कोई बात नही है। लूनी की सब्जी और पंचकणी को रोटी का भगवान स्वामिनारायण ने भोग लगाया। आम के वृक्ष के नीचे भोजन करते करते बोले यह तो अच्छा है। अधिक स्वाद वाला है। तभी ब्रह्मचारीजी आ गये। आप बोले मैं नहाने जा रहा हूँ। ब्रह्मचारी आज मेरा स्नान ! दूसरा नही, ब्रह्मचारी समझ गये कि गरीब भूदेव की इच्छा पूरी करने के लिये महाराज यहाँ पर आये है। कैसा पवित्र चरित्र है। ''नित-नित नौतम लीला करता अविनाशी'' इस वाक्य का यह विस्तार है। ऐसे नये लीला मेरे प्रभु नित-नित करते है।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव के चंदन वाधा का दर्शन

विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में प्रति वर्ष की तरह वैशाख सुद-३ अक्षय तृतीया को भगवान श्रीहरि के स्वरुप को श्री नरनारायणदेव आदि देवो को सुंदर मवयगिरी के चंदन से केसर युक्त अलौकिक वाधा किया गया है। वाधा पर सुंदर कलात्मक कारीगरी ठाकुरजी के पूजारी ब्रह्मचारी संतो द्वारा किया गया था। भगवान को इस असह्य गर्मी में चंदन के सुंदर कलात्मक वाघा किया जाता है। ताकि शीतलता बनी रहे। यह वाघा ज्येष्ठ सुद-१४ तक प्रतिदिन किया जाता है। हजारो हरिभक्त दर्शन करते है। पूरा धर्मकुल यह देखकर खूब खुश हुए। सेवा भावी श्रद्धालु हरिभक्त प्रतिदिन यजमान बनकर सेवा देते है। वर्षो पहले संत लोग हाथ से चंदन घिसते थे। और ठाकुरजी को चंदन का लेप लगाया जाता था। अभी आधुनिक समय में मशीन द्वारा यह कार्य किया जाता है। श्रीहरि के सभी आश्रित अलौकिक चंदन के वाघा का दर्शन का लाभ लेते है। (कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर पूनम की सत्संग सभा

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से पू. महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से पिछले एक वर्ष से प्रत्येक पूनम को सेवा भावी हरिभक्त यजमान पद से धर्मकुल के सानिध्य में प्रसादी के विशाल सभा मंडप में सत्संग सभा का ८-१५ से १०-३० बजे तक सुंदर आयोजन होता है। जिस में बाहर गाँव से आये तथा शहर के हजारो हरिभक्त कथा के बाद धर्मकुल का आशीर्वाद एवम् अलौकि प्रसाद ग्रहण करते है। वैशाख सुद-१५ पूनम की सत्संग सभा के यजमानश्री प.भ. अशोकभाई हरगोवनदास पटेल (रामनगर) परिवार ने लाभ उठाया था। स.गु. शा. स्वा. सत्यस्वरुपदासजी (नारायणघाट) ने वक्ता पद से सुंदर कथा किये थे। प्रत्येक पूनम की तरह इस बार भी सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री आयेथे। सभी को आशीर्वाद दिये थे। पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी और संत मंडल ने सुंदर प्रबन्ध किये थे। (कोठारी शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी कालुपुर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल का १९वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा बोपल मंदिर के महंत स्वामी धर्मसुतप्रियदासजी तथा स्वा. ध्यानप्रियदासजी की प्रेरणा से बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर का १९ वाँ वार्षिक पाटोत्सव ता. १४-५-२४ को प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो से उल्लासपूर्वक पूर्ण किया गया। पाटोत्सव के यजमान प.भ. हसमुखभाई मणीलाल सोनी परिवार था। इस प्रसंगोचित सभा में प.पू. लालजी महाराजश्री सभी को आशीर्वाद दिये थे। ता. १२-५-२४ को बोपल के २०० युवक-युवतियोने सत्संग शिबिर में आये थे। यहाँ के महिला मंडल द्वारा द्वारका में २४-४ से २८-४-२४ तक श्रीमद् भागवत पारायण शास्त्री ध्यानप्रियदासजी स्वामी के वक्तापद से पूर्ण किया गया था।

निज मंदिर के सभा मंडप में प.भ. रतीभाई पटेल और हरिभक्तो के आर्थिक सहयोग से वातानुकूलित किया गया। यहाँ के संत गाँवो में सत्संग का अच्छा कार्य कर रहे है। (प्रवीण उपाध्याय)

दाहोद जिला के सर्वप्रथम नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर भोजेला (वसई टिंबा) में मूर्ति प्रतिष्ठा समारोह

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अ.नि. पू. स.गु. स्वामीश्री जानकीवल्लभदासजी (भंडारी दादा) के दिव्य प्रेरणा से स.गु. महंत स्वामीश्री धर्मस्वरुपदासजी (नाथद्वारा-पोरडा) के सुंदर मार्गदर्शन से और स.गु. पुराणी स्वामीश्री हरिस्वरुपदासजी (खेरवावाले) की प्रेरणा से अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव के अर्न्तगत दाहोद जिला के सर्वप्रथम

नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर भोजेला (वसई टिंबा) में ता. २०-५-२०२४ से ता. २४-५-२४ तक मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचान्ह पारायण सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध विद्वान कथाकार पू. स.गु. शास्त्री स्वामी श्री रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्ता पद से इस क्षेत्र के हजारो कथा प्रेमी भक्त कथा का श्रवण किये थे ।

इस अवसर पर संहिता पाठ का अच्छा प्रबन्ध किया गया था । जिस में ४ संहितापाठी संत आये थे। कथा पारायण के यजमान स.गु. पुराणी स्वामी श्रीहरि स्वरुपदासजी (खेरवा) रहे थे। यहाँ के सभी भक्त छोटी बडी सेवा दिये थे । इस अवसर पर मंगलप्रवचन पू. स.गु. महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी (जेतलपुर मंदिर महंतश्री) अच्छे रुप से हरिभक्तो के खुश किये थे ।

सभा का संचालन शा. स्वामी भक्तिकिशोरदासजी और स.गु. ब्र. सरजूदासानंदजी (द्वारिका) ने अच्छे से किये थे। धामो धाम से संत महंत बडी संख्या में आयेथे। ता. २४-५-२४ हम सभी के हृदय सम्राट श्री नरनारायणदेव पीठाधिश्वर प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी आदि संत पार्षद मंडल के साथ पधारे थे । और नये भव्य मंदिर में सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा वेदोक्त विधि से करके सभा में आकर कथा की पूर्णाहुति की आरती उतार कर पूरे भोजेला गाँव को और मंदिर निर्माता पू. धर्मस्वरुप स्वामी, पू. हरिस्वरुप स्वामी और वासुदेव स्वामी आदि के उपर खुश होकर आशीर्वाद दिये थे। इस अवसर पर पूरा ग्राम और पू. धर्मस्वरुप स्वामी के शिष्य मंडल ने प्रेरक कार्य किये थे ।(शा. स्वा. वासुदेवचरणदासजी - पोरडा)

श्रीहरि प्रस्थापित श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका १९७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से अ.नि.स.गु. महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी और उनके गुरु आदि दिव्य संतो की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर के महंत स्वामी सत्यसंकल्पदासजी के सुंदर मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका का १९७ वाँ वार्षिकोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्यमहाराजश्री के शुभ सानिध्य में वैशाख वद-५ ता. २८-५-२०२४ को उल्लासपूर्वक मनाया गया था ।

सर्व प्रथम प.पू. आचार्य महाराजश्री करकमलो से श्री मुरली मनोहर हरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार महाभिषेक विधिवत रुप से किया गया था । ईस अवर पर बगोदरा स्थित मानव सेवा ट्रस्ट के विकलांग लोगो को भोजन खिलाया गया था । पाटोत्सव के यजमान प.भ. परसोत्तमदास त्रिभोवनभाई पटेल, हीराबेन परसोतमभाई (भाउपुरा) - ह. कल्पेशभाई घनश्यामभाई, पिन्टुभाई पटेल परिवार था । धामो-धाम से संतो अहमदाबाद से मंदिर के पू. महंत स्वामी आदि संत आये थे ।(कोठारीश्री धोलका मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सरढव का १०२ वाँ पाटोत्सव, पुनःमूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से पू. स.गु. स्वामी परमेश्वरदासजी तथा पू. स.गु. स्वामीश्री नारायणस्वरुपदासजी (प्रयागराज-जयपुर मंदिर के महंतश्री) की प्रेरणा मार्गदर्शन से सरढव श्री स्वामिनारायण मंदिर के १०२ वे वार्षिक पाटोत्सव के अर्न्तगत श्री घनश्याम महाराज, श्री हनुमानजी, श्री गणपतिजी आदि देवो की पुनः प्रतिष्ठा महोत्सव ता. २५-५-२०२४ से ता. २५-५-२४ तक उल्लास पूर्वक मनाया गया था । इस अवसर के उपलक्ष्य में श्रीमद् भागवत दशम स्कंध त्रिदिनात्मक पारायण स.गु. शास्त्री स्वामीश्री हरिप्रियदासजी गुरु स.गु. शा. स्वा. हरिकेशवदासजी गुरु स.गु. शा. स्वा. हरिकेशवदासजी के वक्तापद से की गयी थी।

ता. २५-५-२०२४ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा ठाकुरजी के १०२ वे पाटोत्सव और पुन प्रतिष्ठा वेदोक्त विधि से करके आरती उतारकर सभा में विराजकर आशीर्वाद दिये थे ।

संहितापाठ का सुंदर प्रबन्ध किया गया था । पूरे प्रसंग का सभा संचालन स.गु. शा. स्वा. ब्रह्मविहारीदासजी (सुरेन्द्रनगर मंदिर महंतश्री) और स.गु. शा. स्वामी सत्यप्रकाशदासजी (अंजली महंतश्री) ने सम्भाला था । इस महोत्सव कच्छ और यहाँ के हरिभक्त ने सुंदर सेवा दी थी । (स्वा. मंदिर सरढव कोठारीश्री और पार्षद पुष्पेन्द्र भगत)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पेथापुर २० वे वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अ.नि.स.गु. पूजारी स्वामी जयप्रकाशदासजी (मूली) की दिव्य प्रेरणा से तथा महंत स्वामी अजयप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से श्री

स्वामिनारायण मंदिर पेथापुर के २० वे पाटोत्सव २१-५-२४ से २५-५-२४ तक उल्लासपूर्वक मनाया गया था । इस अवसर पर स.गु. महंत शास्त्री स्वामी यज्ञप्रकाशदासजी (कलोल- प्रभाहनुमानजी जयमीतपुरा) के वक्तापद से पारायण किया गया था ।

इस अवसर पर स.गु. शा. स्वामी गुरुप्रसाददासजी, शा. आनंद स्वामी, नरोत्तम भगत, भरत भगत आदि ने प्रेरक सेवा दिये थे । अन्तिम दिन ता. २५-५-२४ के दिन अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर), पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर), पू. गुरुप्रसाद स्वामी आदि संतोने आशीर्वाद दिये थे । इसके बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का स्वागत किया गया था । उन्होने ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा को आशीर्वाद दिये थे । धामो-धाम से अनेक संत आये थे ।(कोठारीश्री पेथापुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा ४२ वे वार्षिक पाटोत्सव-बहनो के मंदिर का दशाब्दी महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर) की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्रीहरि प्रसादीभूत तीर्थ उनावा श्री स्वामिनारायण मंदिर (भाईयोका) ४२ वे वार्षिक पाटोत्सव एवम् बहनो के मंदिर का दशाब्दी महोत्सव अ.नि. भगाभाई विठ्ठलभाई पटेल, अ.नि. शांताबेन भगाभाई पटेल, अ.नि. लालभाई विठ्ठलभाई पटेल तथा अ.नि. हिराबेन लालभाई पटेल परिवार के पुण्य याद में ता. ६-५-२४ से ता. १०-५-२४ तक उल्लास पूर्वक मनाया गया था ।

इस प्रसंग के उपलक्ष्य में सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध विद्वान कथाकार पूज्य स.गु. शास्त्री स्वामी श्री रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्ता पद से श्रीमद् विदुरनीति पंचान्ह पारायण की गयी । यह सुंदर अवसर पर सभी बहनो की गुरु प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री पधारे थे। बहनो को आशीर्वाद दी थी ।

ता. १०-५-२०२४ अखात्रीज के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। और दोनो मंदिरो में ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारकर सभा में बिराजकर सभी हरिभक्त एवम् यजमान परिवार को आशीर्वाद दिये थे । इस अवसर पर पोथीयात्रा, ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट आदि सुंदर कार्यक्रम हुए । महंत शास्त्री स्वामी देवप्रकाशदासजी का अच्छा आयोजन था । धामो-धाम से संत पधारे थे ।(पूजारी किशन भगत)

श्री स्वामिनारायण मंदिर चिखलोड श्री घनश्याम महाराज का १७५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से अ.नि. स.गु. स्वामी हरिप्रसाददासजी (लिमडावाले) तथा अ.नि.स.गु. भंडारी दादा स्वा. जानकीवल्लभदाजी (पोरडा) के दिव्य प्रेरणा से तथा स.गु. स्वामी राजेन्द्रप्रसाददासजी की प्रेरणा से तथा स.गु. महंत स्वामी धर्मस्वरुपदासजी (पोरडावाले) के सुंदर मार्गदर्शन में श्रीहरि समकालीन नंद संतो मे से स.गु. महानुभावानंद स्वामी की कृपा से श्री नरनारायणदेव के अर्न्तगत चिखलोड मंदिर में बिराजमान घनश्याम महाराज के १७५ वर्ष पूर्ण होने पर शतामृत महोत्सव ता. १४ मई से १७ मई तक उल्लास पूर्वक मनायी गयी । इस अवसर पर श्री भक्तिचिंतामणी ग्रंथ की कथा स.गु. शास्त्री स्वामी वासुदेवचरणदासजी के वक्ता पद से पूर्ण हुई थी । ता. १७-५-२४ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । आप के करकमलो द्वारा श्री घनश्याम महाराज का शतामृत महोत्सव के अवसर पर षोडशोपचार अभिषेक, आरती की गयी थी । इसके बाद सभा में आकर सभी को आशीर्वाद दिये थे। बहनो को दर्शन आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री विशेषकर आयी थी । गाँव के सभी हरिभक्त अच्छा सहयोग सेवा दिये थे । इस अवसर पर अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी आदि धामो-धाम से पधारे थे । (कोठारीश्री चिखलोड)

श्री स्वामिनारायण मंदिर घमीज रजत जयंती महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा अ.नि. स.गु. स्वामी श्री जानकीवल्लभदासजी (भंडारी दादा) की दिव्य प्रेरणा से स.गु. महंत स्वामी धर्मस्वरुपदाजी (नाथद्वारा-पोरडा) के सुंदर मार्गदर्शन में और अ.नि. मणीबेन बबाभाई पटेल (घमीज), अ.सौ. जीताबेन दिनेशभाई पटेल, अ.सौ. मेघलबेन पूर्वेशभाई पटेल (यु.के.), अ.सौ. दीशाबेन समीरभाई पटेल परिवार के साथ मुख्य यजमान पद से और गं.स्व. सुशीलाबेन कांतिभाई पटेल (कथा के यजमान) आदि परिवारो ने काम किया था । ता. २७-५-२४ से ता.

२९-५-२४ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण ग्रंथ की कथा सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध कथाकार स.गु. शास्त्री स्वामी वासुदेवचरणदासजी के वक्ता पद से हुई । इस अवसर पर ता. २८-५-२०२४ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी आदि संत पार्षद मंडल पधारे थे । सर्व प्रथम ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में आकर सभी हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये थे ।

इस अवसर पर धामोधाम से संत-महंतश्री पधारे थे । संहितापाठ का सुंदर प्रबन्ध किया गया था । इसमें ४ संत पधारे थे । पूरे कार्यक्रम का संचालन शा.स्वा. जयेन्द्रप्रसाददासजी और ब्र. स्वा. सरजूदासजीने किया था । (कोठारी श्री घमीज)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार
मूली श्री राधाकृष्णदेव वांकानेर श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

मूली धाम में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से अ.नि. पू.स.गु. शा. स्वामी गोपालचरणदासजी की दिव्य प्रेरणा से अहमदाबाद कालुपुर मंदिर के पू. महंत स.गु. शा. स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के अच्छे मार्गदर्शन से मूली मंदिर के पू. पूर्व महंत स.गु. स्वामी श्री श्यामसुंदरदासजी के सहयोग से श्रीहरि प्रसादीभूत श्री स्वामिनारायण मंदिर वांकानेर में नूतन मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में ता. १६-५-२४ से २०-५-२४ तक श्रीमद् भागवत दश्मस्कंध पंचान्ह रात्रि पारायण तथा त्रिदिनात्मक हरियज्ञ उल्लासपूर्वक किया गया था । स.गु. शा. स्वामीश्री सूर्यप्रकाशदासजी गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी गोपालचरणदासजी के वक्तापद से हजारो हरिभक्तोने कथा सुनकर लाभान्वित हुए थे ।

ता. २०-५-२०२४ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। आपके करकमलो से नूतन मंदिर में विराजमान ठाकुरजी की प्राणप्रतिष्ठा विधिवत रुप से की गयी । इसके बाद वांकानेर की सभा में प्रेमी भक्तो को आशीर्वाद दिये थे । बहनो को दर्शन देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारी थी ।

पूरे अवसर एवं सभा का संचालन महंत शा. स्वा. देवप्रकाशदासजी (उनावा) और शा. स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी (मूली) ने अच्छे से किया थे । महंतश्री मुकुंद स्वामी (हरिद्वार) महंत शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी (बापुनगर), देव स्वामी (उनावा महंतश्री), व्रज स्वामी (मूली), के.पी. स्वामी (रतनपर) आदि संतोने सुंदर सेवा दी थी । यहाँ के यजमान हरिभक्त सेवा में अच्छा सहयोग दिये थे ।(जे. के. स्वामी - वांकानेर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर दरबारगढ मोरबी (१५०) सार्ध शताब्दी महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री पुरे धर्मकुल परिवार के कृपा से यहाँ मंदिर के निर्माता अ.न.f पू.स.गु. शास्त्री स्वामी श्री गोपालचरणदासजी, अ.नि.स.गु. शास्त्री स्वामी विज्ञानदासजी की दिव्य प्रेरणा से श्रीहरिकृष्णधाम के संतो के मार्गदर्शन प्रेरणा तथा सभी हरिभक्तो के सहयोग से ता. १७-५-२४ से ता. २३-५-२४ तक मोरबी दरबारगढ़ श्री स्वामिनारायण मंदिर का सार्धशताब्दी महोत्सव मनाया गया था । इसके उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण पू. स.गु. शास्त्री स्वामी धर्मजीवनदासजी के वक्तापद से हजारो कथा प्रेमी लाभ उठाये थे ।

धामोधाम से संत-सांख्ययोगी बहने आयी थी । ता. २०-५-२४ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । ठाकुरजी की आरती उतारे थे । सभी हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये थे ।

ता. १९-५-२४ के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री आये थे । यहाँ पधारकर ठाकुरजी की आरती करके सभा मैं बैठकर हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये थे । बहनो को आशीर्वाद देने के लिये बहनो की गुरु प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री पधारी थी । निज मंदिर में पधारकर ठाकुरजीकी आरती उतारी थी । बहनो को आशीर्वाद प्रदान की थी । इस महोत्सव में हरिभक्त छोटे-बड़े सेवा का लाभ दिये थे। श्रीहरि तथा धर्मकुल की कृपा प्राप्त किये थे । सभा का सुंदर संचालन हरिकृष्णधाम के संत और श्री किशन बाघेला ने किया था । (साधु घनश्यामजीवनदासजी - मोरबी)

अक्षरवास

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के संत स.गु. स्वामी घनश्यामप्रसाददासजी गुरु स.गु. पुराणी स्वामी घनश्यामचरणदासजी वैशाख कृष्ण पक्ष-२ ता. २५-५-२०२४ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते अक्षरनिवासी हुए है ।

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

चैत्र सुद-१ प.भ. अ.नि. मोरोबेन नवाराम (गोलीया-वाली), प.भ. अ.नि. वाघजीभाई एम. पटेल (वडदला)। **चैत्र सुद-२** प.भ. कानबाई विरजीभाई केराई (मांडवी-कच्छ), ट्रीन्डस टेकनोलोजी (अहमदाबाद)। **चैत्र सुद-३** प.भ. कुवरजी लालजी (मांडवी-कच्छ), प.भ. नारणभाई अमरशीभाई (हलवद), प.भ. भूपतभाई चतुरभाई पोरीया (सुरेन्द्रनगर), प.भ.अ.नि. रतनबाई करशन जीणा जेसाणी (बलदीया-कच्छ), प.भ. लीलाबेन नरसिंहभाई मनाणी (सुरत)। **चैत्र सुद-४** प.भ. मेघजी मनजी आसाणी (मांडवी-कच्छ), प.भ.अ.नि. बेनी पुरूषोत्तमदास पटेल (करजीसण)। **चैत्र सुद-५** प.भ. प्रेमबाई रवजी हालाई (गोधरा-कच्छ), प.भ. अ.नि. कनुभाई प्रह्लादभाई (अहमदाबाद), प.भ. देवल विक्रमभाई शाह (अहमदाबाद)। **चैत्र सुद-६** प.भ. वालजी नारण भुडीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. अ.नि. गांडाभाई मोहनलाल पटेल (गांधीनगर), प.भ. डॉ. घनश्यामभाई महादेवभाई (अहमदाबाद), प.भ. फेनिल तथा निरव (अहमदाबाद), प.भ. कोकीलाबेन जयंतीलाल पटेल (डांगरवा), प.भ. देव्यानिबेन हरिकृष्णभाई (अहमदाबाद), प.भ. चंद्रकान्तभाई जयंतीलाल ठक्कर (अहमदाबाद), प.भ. आरवी राजेशभाई पांभर (बोपल), अ.नि. स.गु. ब्र. स्वा. मायातितानंदजी (खंभात), प.भ. विनोदभाई चोटलीया (राजकोट), प.भ. भरतभाई जादव। **चैत्र सुद-७** प.भ. धनबाई करशन राबडीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. देवजीभाई सूतरीया (अमरेली)। **चैत्र सुद-८** प.भ. राधाबाई मुलजी हालाई (मांडवी-कच्छ), प.भ. माणेकलाल शंकरदास पटेल (मोखासण), प.भ. रेखाबेन रमेशभाई पटेल (अहमदाबाद)। **चैत्र सुद-९** प.भ. अ.नि. कालुभाई उमेदसिंह चौहाण (बोपल)। **चैत्र सुद-१०** प.भ. कानबाई मनजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. मिनाक्षीबेन मस्की (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. जीवीबेन पुरूषोत्तमदास पटेल (राजपुर), प.भ. अ.नि. धनलक्ष्मीबेन माणेकलाल भावसार (अहमदाबाद)। **चैत्र सुद-११** प.भ. अ.नि. मंजुलाबेन कानजी केराई (मांडवी-कच्छ), प.भ. सोमाभाई गोबरभाई चौधरी (प्रतापपुरा)। **चैत्र सुद-१२** प.भ. कानजी लक्ष्मण वरसाणी (गोधरा-कच्छ), प.भ. शैलेषभाई भावसार (अहमदाबाद), प.भ. भीखाभाई वेलाभाई चौधरी (मकाखाड), प.भ. अ.नि. कांताबेन डाह्यालाल सोनी (अहमदाबाद), प.भ. जीवराजभाई पानसुरीया (निकोल) प.भ. निल निर्मल पटेल, प.भ. आशाबेन (मुंबई), प.भ. रमेशभाई जेठालाल कोरीया (मोटेरा), प.भ. अ.नि. कस्तुरबेन परसोतमभाई (अहमदाबाद), प.भ. हरिदर्शन भाईलालभाई सोनी (अहमदाबाद), हरिकृष्णधाम (हलवद), प.भ. राणा नगीनदास कांतिभाई (अहमदाबाद), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ)। **चैत्र सुद-१३** प.भ. तेजबाई मावजी राबडीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. मंजुलाबेन विनोदभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. रमीलाबेन मनोजभाई पटेल (जवारज), प.भ. अ.नि. सविताबेन हरजीभाई (गोविंदपुरा), प.भ. प्रह्लादभाई विठ्ठलदास पटेल (करजीसण), प.भ. प्रविणभाई लालजीभाई दरजी (अहमदाबाद), प.भ. मनुभाई बाबुभाई पटेल (अहमदाबाद)। **चैत्र सुद-१४** प.भ. अ.नि. धनबाई धनजी हरसीयाणी (केरा-कच्छ), प.भ. अजयभाई, प.भ. ओधवजीभाई (नरोडा)। **चैत्र सुद-१५** प.भ. नारणभाई त्रिकमभाई पटेल (पोर), प.भ. निधिबेन रविभाई ठुम्मर (अहमदाबाद), श्री स्वामिनारायण महिला मंडल (निंगाला), प.भ. सुरेशभाई शिवजीभाई राबडीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. अ.नि. रामबाई करशन हिराणी (गोधरा-कच्छ), प.भ. अ.नि. मेघबाई प्रेमजी हिराणी (गोधरा-कच्छ).

चैत्र वद-१ श्री स्वामिनारायण महिला मंडल (फाटसर), प.भ. गोपाल कानजी वेकरीया (सुखपर-कच्छ), प.भ. भानुबेन वेलजीभाई टांक (जीरागढ)। **चैत्र वद-२** प.भ. अ.नि. वालबाई विश्राम हिराणी (गोधरा-कच्छ), प.भ. अ.नि. मुक्ताबेन भीखाभाई मोणपुरा (अनीडा), प.भ. अ.नि. मेघजी धनजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. परेशभाई नटवरभाई पटेल (चंद्राला), प.भ. अशोकभाई डाह्याभाई पटेल (कलाली-वडोदरा)। **चैत्र वद-३** प.भ. नारायणभाई अमरशीभाई हडीयल (हलवद), प.भ. अ.नि. समुबेन लवजीभाई डुंगराणी (सुरत), प.भ. माणेकलाल नारणदास पटेल (कलोल)। **चैत्र वद-४** प.भ. विठ्ठलदास कचरादास पटेल (मोखासण), प.भ. मिनाक्षीबेन मगनलाल पटेल (डांगरवा), प.भ. पियुष अरविंदभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. भारतीबेन विनीतभाई परीख (अहमदाबाद), प.भ. पंकजकुमार शामलभाई पटेल (वावोल)। **चैत्र वद-५** प.भ. अ.नि. मधुसुदनभाई आर. सोनी, प.भ. शारदाबेन दुलाभाई झालावाडीया (अहमदाबाद), श्री स्वामिनारायण मंदिर बहेनो का (अहमदाबाद)। **चैत्र वद-६/७** प.भ. अ.नि. सचिन अशोकभाई पटेल (बिलासीया), प.भ. अ.नि. अशोकभाई तथा अ.नि. घनश्यामभाई (वडताल), प.भ. धैर्य सुनीलभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. वसंतकुमार नटवरभाई पटेल (सोजा)। **चैत्र वद-८** प.भ. सचिन रामजी हालाई (मांडवी-कच्छ), प.भ. अ.नि. शारदाबेन बी. जोगाणी (निकोल), प.भ. हितेषभाई गणेशभाई सथवारा (निकोल), प.भ. अ.नि. किरीटभाई भगवानदास सोनी (बोरसद), प.भ. मनसुखभाई खोडाभाई वघासीया (अहमदाबाद)। **चैत्र वद-९** प.भ. धार्मिक हितेषभाई पटेल (पोर)। **चैत्र वद-१०** प.भ. अमृतभाई जीवणभाई चौधरी (बदपुरा), प.भ. अ.नि. मेघजीभाई मूलजीभाई हालाई (मांडवी-कच्छ), प.भ. अ.नि. करशन देवराज गोरसीया (बलदीया-कच्छ), प.भ. प्रफुलभाई विरजीभाई काछडीया (सोला)। **चैत्र वद-११** प.भ. शिवजी धनजी वाघजीयाणी (गोडपर-कच्छ)। **चैत्र वद-१२** प.भ. शैलेषभाई भावसार (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. धीरजलाल कांतिलाल झिंझुवाडिया (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. धीरजलाल कांतिलाल सोनी (विरमगाम), प.भ. अरविंदभाई भूदेव (सुरेन्द्रनगर), श्री स्वामिनारायण महिला मंडल (झुलासण). प.भ. अ.नि. दवलबेन मोहनभाई मोतीसरीया (अहमदाबाद), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ), प.भ. पार्थ सुरेशभाई पटेल (कलोल), प.भ. रमेशभाई काथरोटीया (अहमदाबाद), प.भ. जीनेश मीस्त्री (अहमदाबाद), प.भ. आलाप ईन्द्रवदनभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. प्रहल निकुंजभाई किंजलबेन (अहमदाबाद), प.भ. शन्नी दिनेशभाई पटेल (अंबापुर), प.भ. संजय मनुभाई पटेल (वडोदरा)। **चैत्र वद-१३** प.भ. अ.नि. पद्मनाभभाई मुकुन्दराय भट्ट (हाथीजण), प.भ. अ.नि. पुष्पाबेन हरजीवनदास सोनी (अहमदाबाद), प.भ. शामबाई भोगीलाल हिराणी (मानकुवा-कच्छ)। **चैत्र वद-१४** प.भ. अ.नि. देवजीभाई रामजी वरसाणी (माधापर-कच्छ), प.भ. विपुलभाई कांतिभाई मांदलीया (सुरत), प.भ. ईश्वरभाई त्रिभोवनदास पटेल (मुखी) (माणसावाला)। **चैत्र वद-३०** अ.सौ.अ.नि. अमीबेन सागर (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. कीर्तिभाई वनराजभाई चावडा (अहमदाबाद), प.भ. ध्यान चंदाराणा (अहमदाबाद).

Printed and Published by **Shastri Swami Purushottamprakashdasji** on behalf of **Shree Swaminarayan Temple** and **Published From :** Shree Swaminarayan Mandir Kalupur, Ahmedabad-380001. Printed at **Asian Printery**, Near Talati Hall, Raipur, Ahmedabad-380001.
Editor : Shastri Swami Purushottamprakashdasji

चीखलोड मंदिर का १७५ वे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी की आरती उतारते और सभा में युवको के साथ प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

गोधरा मांडवी (कच्छ) मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते और सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

संस्कारधाम, कर्णावती में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के शिक्षावर्ग को सम्बोधित करते अपने प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

कल्याण पुष्टिमार्गी हवेली के ५४७ वे उत्सव के अवसर पर प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ युवा वैष्णवाचार्यश्री गोस्वामी शरनमकुमार महोदय ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2024-2026 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2026

भोजेला (वसई टींबा जि. दाहोद) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा विधि करते और सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

वांकानेर (मूली प्रदेश) मंदिर में प्रतिष्ठा विधि करते और सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

पूनम को अहमदाबाद मंदिर में सत्संग सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ प.पू. लालजी महाराजश्री ।